पंडित परमसुख ने पत्रा खोला, पन्ने पलटे, माथे पर कुछ बल डाला और गंभीर मुद्रा में बोले– "बिल्ली की हत्या से घोर कुंभीपाक नरक का विधान है।"

रामू की माँ रुआँसी होकर बोलीं, "पंडित जी, अब क्या होगा?"

पंडित परमसुख बोले– "हम किस दिन के लिए हैं? चिंता की कोई बात नहीं। इसका प्रायश्चित हो जाएगा। बस, एक सोने की बिल्ली बनवाकर बहू से दान करवा दो और दान के बाद इक्कीस दिन का पाठ करवा देना।"

रामू की माँ बोलीं– "बिल्ली कितने तोले की बनेगी?"

पंडित जी बोले– "वैसे शास्त्रों में तो बिल्ली के वजनभर सोने की बिल्ली बनाने का विधान है लेकिन अब तो घोर कलयुग है। तो बस, इक्कीस तोले की बिल्ली से काम चल जाएगा।"

यह सुनकर रामू की माँ की आँखें फटी की फटी रह गईं। वह बोलीं– "मैं इतना सोना कहाँ से लाऊँगी?"

मोल-तोल शुरू हुआ और मामला ग्यारह तोले की बिल्ली पर जाकर तय हुआ।

उसके बाद, पूजा-पाठ की बात आई। पंडित परमसुख बोले– "उसमें क्या मुश्किल है। मैं पाठ कर दिया करूँगा। पूजा की सामग्री आप मेरे घर भिजवा देना।"

रामू की माँ ने पूछा– "पूजा का सामान कितना लगेगा?"

पंडित जी बोले– "बस, यही कुछ दस मन गेहूँ, एक मन चावल, एक मन दाल, मनभर तिल, पाँच मन जौ, पाँच मन चने, चार पसेरी घी और सिर्फ़ मनभर नमक लगेगा।"

"अरे बाप रे! इतना सामान! इसमें तो बहुत खर्चा आएगा।" रामू की माँ रुआँसी हो उठीं।

पंडित जी बोले– "अब तुम्हीं देख लो। एक तरफ़ तुम्हारी बहू के लिए कुंभीपाक नरक है और दूसरी तरफ़ तुम्हारे लिए थोड़ा-सा खर्चा। इससे मुँह न मोड़ो।"

रामू की माँ ने चारों तरफ़ देखा। सभी को पंडित जी के साथ पाया। रामू की माँ बोलीं– "बस, अब और कुछ तो नहीं?"

पंडित जी बोले– "इक्कीस दिन के पाठ की दक्षिणा और दोनों वक्त पाँच-पाँच ब्राम्हणों को भोजन कराना होगा। खैर! उसकी चिंता न करो। मैं अकेला ही दोनों वक्त का भोजन कर लूँगा। उससे पाँचों ब्राह्मणों के भोजन का फल मिल जाएगा।" मिसरानी पंडित जी की तोंद को देख मुसकराई।

"अच्छा! तो फिर प्रायश्चित का प्रबंध करवाओ। रामू की माँ, ग्यारह तोला सोना निकालो, मैं उसकी बिल्ली बनवा लाता हूँ। तब तक तुम पूजा की सामग्री का प्रबंध करवाओ, और...."

पंडित जी की बात अभी खत्म नहीं हुई थी कि महरी हाँफ़ती हुई आई और लड़खड़ाते स्वर में बोली– "माँ जी, बिल्ली तो उठकर भाग गई।"

– भगवतीचरण वर्मा

शब्दार्थ

प्रायश्चित	=	पाप से उबरने के लिए किया गया कार्य, पछतावा
नदारद	=	गायब होना
बिजली की तरह	=	तेज़ी से
सातवें आसमान पर	=	बहुत अधिक
ढेर होना	=	मर जाना
महरी	=	नौकरानी
जितने मुँह, उतनी बातें	=	लोगों द्वारा अलग-अलग तरह की बात कहना

17.2 बोध-प्रश्न

1. दिए गए शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त शब्द चुनकर खाली जगह लिखिए :

(i) रामू की बहू ने .... का पाटा खींचकर ज़ोर से बिल्ली पर दे मारा। (लोहे / लकड़ी)

(ii) बिल्ली की हत्या की खबर पड़ोस में .... की तरह फैल गई। (बिजली / पानी)

(iii) पंडित जी ने कहा– "................... की बिल्ली बनवाकर बहू से दान करवा दो।" (चाँदी / सोने)

(iv) मामला .... तोले सोने की बिल्ली पर जाकर तय हुआ। (ग्यारह / इक्कीस)

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) रामू की बहू किससे नफ़रत करती थी?

(क) सास से ☐ (ख) बिल्ली से ☐

(ग) रामू से ☐ (घ) पंडित से ☐

(ii) पंडित परमसुख ने कितने दिन का पाठ करने के लिए बताया?

(क) पाँच ☐ (ख) ग्यारह ☐

(ग) बीस ☐ (घ) इक्कीस ☐

17.2 आइए समझें

17.2.1 अंश–1

आइए, कहानी के इस हिस्से को एक बार समझें।

अगर कबरी बिल्ली .... जितने मुँह, उतनी बातें।

सास ने घर-बार रामू की बहू को सौंप रखा था। घर में एक कबरी बिल्ली भी थी। वह रामू की बहू को बहुत तंग करती थी। कभी दूध पी जाती, कभी घी खा जाती, कभी रबड़ी-मलाई खा जाती। रामू की बहू थोड़ा इधर-उधर होती, तो कबरी अपना कमाल दिखा जाती। इससे रामू की बहू उससे बहुत नफ़रत करती थी। बहू बिल्ली का कुछ कर नहीं पाती थी, बस, परेशान होती रहती थी।

कबरी बिल्ली रामू की बहू के आस-पास ही मँडराती रहती थी। उसी के पास रहकर बिल्ली को अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने-पीने को मिलती थीं इसीलिए कहा गया है कि बिल्ली घर में किसी से प्रेम करती थी, तो रामू की बहू से। कम उम्र होने के कारण रामू की बहू को अनुभव भी कम था। वह कोई-न-कोई भूल करती और कबरी की मौज हो जाती।

कहानी में कबरी द्वारा समय-समय पर चीज़ें खाने-पीने का विवरण दिया गया है। एक दिन बहू ने बड़े मन से खीर बनाई थी। खीर कटोरे में भरकर ताक पर रख दी थी। पर जैसे ही बहू वहाँ से हटी, बिल्ली ने कटोरा गिरा दिया। बिल्ली खीर खाने लगी। बहू को बहुत गुस्सा आया और उसने बिल्ली पर लकड़ी का पाटा दे मारा। बिल्ली जैसी थी, वैसी ही रह गई। हिली-डुली भी नहीं।

महरी ने सास को बिल्ली के मरने की सूचना दी। मिसरानी ने इसे आदमी की हत्या के बराबर बताया। महरी ने पंडित को बुलाने की बात सुझाई। सास ने पंडित को जल्दी बुलाने को कहा।

पास-पड़ोस में यह खबर बड़ी तेजी से फैल गई। फिर उनके घर औरतों का ताँता लग गया। औरतें तरह-तरह की बातें कर रही थीं।

पाठगत प्रश्न-17.1

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

(i) सास के सामने पान फेंककर बहू कमरे की तरफ़ दौड़ी, क्योंकि–

(क) उसे सास पर गुस्सा आया। ☐

(ख) कमरे से कटोरा गिरने की आवाज़ आई। ☐

(ग) बिल्ली अचानक सामने कूद पड़ी। ☐

(घ) अचानक उसे कोई काम याद आ गया। ☐

(ii) महरी ने किसे बुलाने की बात कही?

(क) रामू को ☐ (ख) जानवरों के डॉक्टर को ☐

(ग) पंडित जी को ☐ (घ) पड़ोसियों को ☐

17.3.2 अंश–2

आइए, अब कहानी के दूसरे हिस्से को एक बार समझें।

महरी भागकर .... उठकर भाग गई।

पंडित जी आ गए। कहानी में उनका विवरण भी दिया गया है कि वे कैसे दिखते थे। उनके आते ही सब एक जगह बैठ गए।

पंडित जी ने बिल्ली की हत्या से घोर कुंभीपाक नरक का विधान बताया। इससे बचने के लिए सोने की बिल्ली दान करने और इक्कीस दिन का पाठ करने का उपाय बताया। सोने की बिल्ली असली बिल्ली के वज़न की होनी चाहिए, ऐसा पंडित जी ने बताया। पंडित जी की यह बात सुनकर सास को बहुत आश्चर्य हुआ। इस पर मोल-तोल हुआ। फिर ग्यारह तोले सोने की बिल्ली दान करने की बात तय हुई।

पूजा के लिए भी पंडित परमसुख ने बहुत सारा सामान लाने को कहा। साथ ही, दक्षिणा देने और ब्राह्मणों को भोजन कराने की बात कही। इतने खर्च की बात सोचकर सास परेशान हो गई पर करती भी क्या? सभी पाप से मुक्ति के इसी उपाय को सही मान रहे थे।

सब तय हो गया पर तब तक बिल्ली उठकर भाग गई।

कहानी का यह अंत बहुत मनोरंजक और अंधविश्वास में पड़े लोगों पर चोट करने वाला है।

पाठगत प्रश्न-17.2

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

(i) 'आँखें फटी की फटी रह गईं' का क्या अर्थ है?

(क) आँखों में दर्द होना ☐ (ख) आँखों में पानी आना। ☐

(ग) दिखाई न देना। ☐ (घ) आश्चर्य होना। ☐

2. सही वाक्य के आगे सही (✓) तथा गलत के आगे गलत (✗) का निशान लगाइए :

(क) पंडित जी ने घोर कुंभीपाक नरक का विधान बताया। ( )

(ख) पंडित जी ने दस दिन का पाठ कराने को कहा। ( )

(ग) मिसरानी, किसनू की माँ, छन्नू की दादी; सब पंडित जी की बात से सहमत थीं। ( )

17.4 भाषा-प्रयोग

इस पाठ की भाषा सरल है, सहज है, बोलचाल का गुण लिए हुए है। कहानी की भाषा में कहीं भी ऐसा नहीं लगता कि जबरदस्ती शब्द रखे गये हों। उसमें एक सरल प्रवाह है। वाक्य छोटे हैं। संवाद छोटे और कसे हुए हैं। पूरी कहानी कहीं भी बोझिल नहीं है। भाषा को सरस बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग भी किया

गया है; जैसे- गुस्से के लिए– 'सातवें आसमान पर', खबर के लिए– 'बिजली की तरह फैल गई', अनेक तरह की बातों के लिए– 'जितने मुँह, उतनी बातें' आदि। प्रतीकों का भी सहारा लिया गया है। सास ने बहू को 'घर की ज़िम्मेदारी सौंप दी' की जगह प्रयोग हुआ है– 'भंडारघर की चाबी रामू की बहू की करधनी में लटकने लगी।' यहाँ चाबी प्रतीक है सभी तरह की ज़िम्मेदारियों एवं अधिकार का।

इस कहानी में वाक्यांशबोधक शब्दों का भी प्रयोग किया गया है; जैसे– 'भंडारघर' और 'रसोई'।

वाक्यांशबोधक शब्द उन्हें कहा जाता है, जो बहुत से शब्दों के स्थान पर एक शब्द के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। इनका प्रयोग बात को संक्षेप में कहने के लिए किया जाता है। बहुत से शब्दों से मिलकर जो भाव निकलता है, एक शब्द ही वह भाव दे देता है। इस प्रकार के शब्द भाषा को समृद्ध और प्रभावशाली बनाते हैं।

इस कहानी में आए 'भंडारघर' शब्द से मतलब उस जगह से है, जहाँ पर घर का तरह-तरह का सामान रखा जाता है। इसी तरह से 'रसोई' उस जगह को कहते हैं, जहाँ पर खाना बनाया जाता है।

इसी प्रकार से और भी बहुत से शब्द हैं, जो बहुत से शब्दों से मिलकर व्यक्त होने वाले भाव को अकेले ही व्यक्त कर देते हैं। ऐसे शब्दों को निम्नलिखित उदाहरणों से समझिए–

- यात्रा करने वाला – यात्री
- जिसकी पत्नी का देहांत हो चुका हो – विधुर
- ऐसा व्यक्ति, जो पढ़ा-लिखा न हो – अनपढ़
- बाहरी देशों से वस्तुओं का मँगाया जाना – आयात
- किए हुए उपकार को मानने वाला – कृतज्ञ
- जिसे किसी बात का पता न हो – अनभिज्ञ
- जिसे किसी बात का ज्ञान न हो – अज्ञानी
- जो अपने देश से प्रेम करता हो – देशप्रेमी
- जो बहुत कम बोलता हो – अल्पभाषी

17.5 आपने क्या सीखा

- अंधविश्वास में पड़कर लोग स्वयं को क्षति पहुँचाते हैं।
- स्वार्थी और चालाक लोग धर्म और आस्था की आड़ में सीधे-सादे लोगों को मूर्ख बनाते हैं।
- तर्कशीलता का अभाव ही कुप्रथाओं व कुरीतियों को बढ़ावा देता है।
- वाक्यांश या बहुत से शब्दों के स्थान पर जो एक शब्द प्रयोग किया जाता है, उसे 'वाक्यांशबोधक शब्द' अथवा 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहते हैं।

17.6 योग्यता-विस्तार

- **लेखक-परिचय –** यह कहानी प्रख्यात लेखक श्री भगवतीचरण वर्मा ने लिखी है। उनका जन्म 30 अक्टूबर, 1903 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले में हुआ था। श्री भगवतीचरण वर्मा ने साहित्य की विभिन्न विधाओं– उपन्सास, कहानी, कविता, संस्मरण, आलोचना, नाटक में लेखन किया है। उनकी लगभग 26 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। वे प्रखर पत्रकार भी रहे हैं। साहित्य में योगदान के लिए उन्हें 'पद्‌मभूषण' से अलंकृत किया गया। उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। 5 अक्टूबर, 1981 को श्री भगवतीचरण वर्मा का देहांत हो गया।
- कहानी में तौल के लिए 'मन' का प्रयोग हुआ है। यह पुराने समय में तौल की इकाई थी। एक मन में चालीस सेर होता था। एक सेर आज के एक किलोग्राम से कुछ कम वज़न का होता था। एक मन आज के करीब 37 किलोग्राम के बराबर होता था।
- तौल के संबंध में ही एक शब्द और आया है – पसेरी। पहले जब 'सेर' की तौल चलती थी, तो एक पसेरी पाँच सेर की होती थी। अब किलोग्राम की तौल चलती है इसलिए पसेरी पाँच किलोग्राम की ही मानी जाती है। अब बड़े शहरों में तौल का माप ग्राम, किलोग्राम, क्विटंल, टन आदि के आधार पर ही चलता है।

17.7 पाठांत प्रश्न

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) बिल्ली घरभर में किससे प्रेम करती थी?

(क) रामू की माँ से ☐ (ख) रामू की बहू से ☐

(ग) रामू से ☐ (घ) किसी से नहीं ☐

(ii) रामू की बहू ने खीर से भरा कटोरा कहाँ रखा था?

(क) ऊपर ताक पर ☐ (ख) रसोई में ☐

(ग) सोने के कमरे में ☐ (घ) दरवाज़े पर ☐

(iii) पंडित परमसुख की बात पर रामू की माँ–

(क) खुश हो गई ☐ (ख) गुस्सा करने लगी ☐

(ग) रुआँसी हो गई ☐ (घ) वहाँ से उठकर चली गई ☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) रामू की बहू कबरी बिल्ली से क्यों नफ़रत करती थी?

....

(ii) रामू की बहू ने लकड़ी के पाटे से कबरी को क्यों मारा?

....

(iii) पंडित परमसुख ने बिल्ली की हत्या करने पर कौन-से नरक का विधान बताया?

....

(iv) कहानी के अंत में क्या हुआ?

....

3. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

(i) नरक – ....

(ii) अंधविश्वास – ....

(iii) भंडारघर – ....

(iv) पूजा-पाठ – ....

(v) तरकीब – ....

4. 'वाक्यांशबोधक' शब्द किन्हें कहते हैं?

....

....

....

5. निम्नलिखित वाक्यांशों को पढ़कर उनके लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द लिखिए :

(i) ईश्वर को मानने वाला ....

(ii) वैराग्य में रहने वाला ....

(iii) विज्ञान को जानने वाला ....

(iv) खाना बनाने वाला ....

(v) अंधविश्वासों में आस्था रखने वाला ....

(vi) पहरा देने वाला ....

(vii) शिक्षा देने वाला ....

6. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

रघुवीर चाचा काफ़ी दिनों से परेशान थे। उनके कमरे के रोशनदान से रात को घुँघरुओं की आवाज़ आती थी। कभी-कभी तो दिन में भी आवाज़ आती थी। सारा घर डरा हुआ था। लोगों का कहना था– चुड़ैल का साया पड़ा है घर पर। वही इधर-उधर घूमती है। उसी की पायल की आवाज़ आती है। खूब पूजा-पाठ करवाया गया। घर में सबको ताबीज़ बाँधे गए। झाड़-फूँक हुई। न जाने क्या-क्या उपाय किए गए पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। आवाज़ आनी बंद नहीं हुई।

पिछली दीवाली से पहले रघुवीर चाचा ने घर की सफ़ाई करवाई। रोशनदान में चिड़िया का घोंसला था। उसे भी हटा दिया गया। उस रात चुड़ैल की पायल की आवाज़ नहीं आई। रघुवीर चाचा ने विचार किया। ऐसा क्या हुआ कि आज आवाज़ नहीं आई! उन्होंने देखा– घोंसले में कुछ छोटे-छोटे घुँघरू पड़े थे। चिड़िया घोंसला बनाने के लिए तिनके उठा लाती थी। उन्हीं तिनकों के साथ पायल के कुछ घुँघरू भी आ गए होंगे। जब घोंसला हिलता, तो घुँघरू बजने लगते। इसी से लगता था कि चुड़ैल चल रही है। रघुवीर चाचा ने अपना सिर पीट लिया– बेकार ही अंधविश्वास के चक्कर में पैसा भी गँवाया और चैन भी।

(i) रघुवीर चाचा क्यों परेशान थे?

....

(ii) दीवाली से पहले रघुवीर चाचा ने क्या करवाया?

....

(iii) एक दिन रात को पायल की आवाज़ बंद क्यों हो गई?

....

(iv) घोंसले में रघुवीर चाचा को क्या मिला?

....

(v) रघुवीर चाचा ने अपना सिर क्यों पीट लिया?

....

आइए, करके देखिए

- अपने परिवार में या गाँव में अंधविश्वास से जुड़ी ऐसी कोई घटना आपने भी देखी होगी। उसे अपने शब्दों में लिखिए।

17.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (i) लकड़ी
   (ii) बिजली
   (iii) सोने
   (iv) ग्यारह
2. (i) (ख) बिल्ली से
   (ii) (घ) इक्कीस

पाठगत प्रश्न-17.1

1. (ख) कमरे से कटोरा गिरने की आवाज़ आई।
2. (ग) पंडित जी को

पाठगत प्रश्न-17.2

1. (घ) आश्चर्य होना।
2. (क) ✓
   (ख) ✗
   (ग) ✓

❀ ❀ ❀

18

स्वस्थ जीवन

हम एक परिवार में रहते हैं। परिवार में हर उम्र के लोग होते हैं। कभी-कभी जब कोई बीमार पड़ जाता है, तुरंत दौड़-भाग शुरू हो जाती है। कुछ समय इलाज हुआ और वह स्वस्थ, किंतु उस व्यक्ति के खान-पान, दवा आदि का विशेष ध्यान रखा जाता है, उसका विशेष प्रबंध किया जाता है। बड़े-बूढ़े हमेशा कहते हैं कि स्वस्थ रहना हो; तो खान-पान ठीक रखें, कसरत किया करें, श्रम करें, अच्छे विचार रखें आदि।

कभी आपने सोचा है कि हमारा जीवन इतने सारे नियमों और खान-पान के साथ क्यों बँधा है? क्योंकि हमारे स्वास्थ्य के लिए जितना संतुलित भोजन चाहिए, उतनी ही नियमितता और व्यायाम-योग आदि भी। तो आइए, आज इस पाठ में स्वास्थ्य-संबंधी कुछ जानकारियाँ लेते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- संतुलित भोजन की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- साफ़-सफ़ाई के महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे;
- स्वस्थ शरीर के लिए योगासन और ध्यान के नियमित अभ्यास की आवश्यकता पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- प्राकृतिक वातावरण को प्रदूषण से बचाकर रखने के तरीकों का वर्णन कर सकेंगे;
- जीवन में पेड़-पौधों के महत्त्व के बारे में लिख सकेंगे;
- उपसर्ग और प्रत्यय से बने शब्दों को पहचान सकेंगे।

करके सीखिए

चित्र 18.1

चित्र 18.1

निम्नलिखित कथनों में से सही के आगे (✓) और गलत के आगे (✗) का निशान लगाइए :

- खाना खाने से पहले हाथ अच्छी तरह धोने चाहिए। ☐
- सोने से तुरंत पहले भोजन करना चाहिए। ☐
- सुबह का नाश्ता भारी होने से पेट खराब हो जाता है। ☐

- व्यायाम और खेल स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। ☐
- खेलने से शरीर सुस्त हो जाता है। ☐

18.1 मूल पाठ

आइए, पूरे पाठ को एक बार पढ़ लेते हैं और देखते हैं, दो मित्रों– इरफ़ान और राकेश के बीच क्या बातचीत हो रही है–

स्वस्थ जीवन

राकेश – क्या हालत बना रखी है, कुछ लेते क्यों नहीं?

इरफ़ान – कौन-सी दवा है, जो मैंने नहीं ली। अब तुम्हीं बताओ, और क्या लूँ?

राकेश – दवा नहीं, ऐसा कुछ लो कि दवा कभी लेनी ही न पड़े।

इरफ़ान – ऐसा क्या हो सकता है?

राकेश – आजकल डॉक्टर भी दवाओं की अपेक्षा संतुलित और पौष्टिक आहार लेने पर बल देने लगे हैं।

इरफ़ान – क्या होता है यह संतुलित और पौष्टिक आहार?

राकेश – वह आहार, जिससे शरीर को सभी आवश्यक तत्त्व सही मात्रा में मिलें- न कम, न ज़्यादा। रोग तभी आक्रमण करते हैं, जब आवश्यक तत्त्व न मिलने से शरीर में रोगों से लड़ने की शक्ति कम हो जाती है इसलिए भोजन में फल, हरी सब्ज़ियाँ, सलाद की अधिकता होनी चाहिए। दालें, दूध और अंकुरित अनाज लेने चाहिए। मैदे की जगह चोकर वाले आटे की रोटियाँ पौष्टिक होती हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि समय पर उचित मात्रा में ही भोजन करें और पानी पर्याप्त मात्रा में पिएँ।

इरफ़ान – तो क्या केवल संतुलित भोजन लेने से रोगों से छुटकारा मिल जाएगा?

राकेश – इससे बीमार पड़ने की संभावना ही कम हो जाएगी। शरीर रोगाणुओं से लड़कर उन्हें रोक सकेगा। परंतु रहन-सहन पर भी ध्यान देना ज़रूरी है। इसके लिए सबसे बड़ी बात है– सफ़ाई। हम खुद भी साफ़ रहें और आस-पास भी सफ़ाई रखें। यह तो तुम जानते ही हो कि शरीर की सफ़ाई में दाँतों की सफ़ाई, नाखून और बाल न बढ़ने देना, नहाना, साफ़ कपड़े पहनना आदि बातें आती हैं। इसके अलावा अपना कमरा, घर, गली और पास-पड़ोस की भी सफ़ाई ज़रूरी है। गंदगी में अनेक बीमारियों के रोगाणु पनपते हैं, जो हमें बीमार कर देते हैं।

इरफ़ान – मेरे पिता जी एक और प्रकार की स्वच्छता की बात करते थे।

राकेश – वह क्या?

इरफ़ान – वह है विचारों की स्वच्छता। यदि हम अपने मन में बुरे विचार न आने दें, तो हमारा मानसिक स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा।

राकेश – मन स्वस्थ होगा तो हमारी सोच बदल जाएगी। हम अच्छे इन्सान बन सकेंगे। असल में शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य में गहरा संबंध है। शरीर स्वस्थ होगा तो मन भी स्वस्थ होगा और मन स्वस्थ होगा तो हम अपना ही नहीं, अपने समाज का भी ध्यान रख सकेंगे।

इरफ़ान – शरीर और मन के स्वास्थ्य के लिए एक उपाय और भी है।

राकेश – वह क्या?

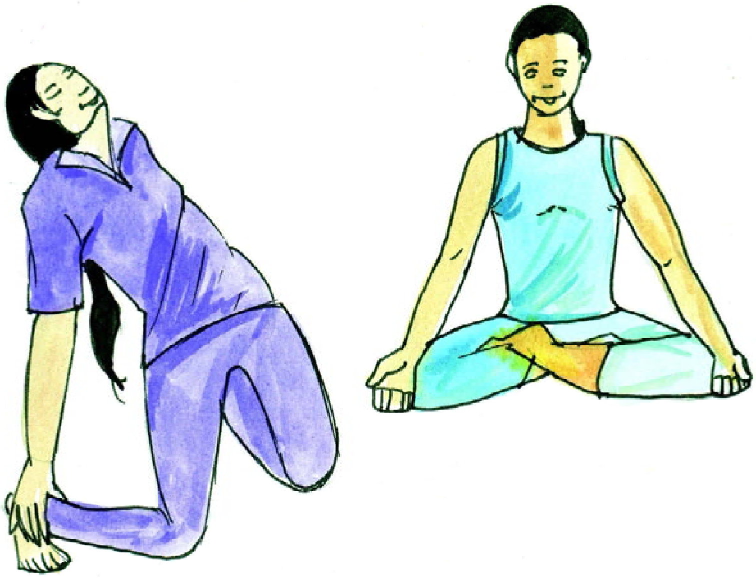

चित्र 18.3

इरफ़ान – यौगिक व्यायाम और ध्यान का अभ्यास। योगासन पूर्णतः वैज्ञानिक क्रिया है। योग के नियमित अभ्यास से हमारा शरीर ही नहीं, हमारा मन-मस्तिष्क भी स्वस्थ रहता है। योगासन के बाद कुछ देर शांत मन से ध्यान करने से बहुत लाभ होता है।

राकेश – शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहें, इसके लिए हमारे चारों ओर अच्छे वातावरण की भी ज़रूरत है। इसीलिए पुराने ज़माने में लोग खेत, बाग-बगीचे, नदी-पर्वत, झील, समुद्र आदि के पास रहना-बसना पसंद करते थे।

इरफ़ान – तुम कहना चाहते हो कि लोग गाँव-शहर छोड़कर जंगलों, नदियों या समुद्री तटों की ओर भागने लगें?

राकेश – शहरों से दूर के जो गाँव हैं, वहाँ तो लोग प्रकृति के नज़दीक रहते ही हैं। शहर के लोग भी प्राकृतिक वातावरण की ओर ध्यान तो दे ही सकते हैं। पेड़-पौधे लगाएँ, उनका संरक्षण करें, पानी के स्रोतों को स्वच्छ रखें। ऐसे अनेक काम हो सकते हैं, जिनसे वातावरण को प्राकृतिक बनाया जा सकता है। इससे मन को शांति मिलती है। नीम के पेड़ की छाँह में जो आनंद है, वह शायद वातानुकूलित कमरों में नहीं है।

इरफ़ान – तो फिर तुम्हारे विचार से क्या करना चाहिए?

राकेश – शहरों में प्रदूषण बढ़ रहा है। विषैले वातावरण में रहने से हमारा स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। नई-नई बीमारियाँ पनप रही हैं। ऐसे में प्रकृति की गोद में जितनी देर भी रह सकें, ज़रूर रहना चाहिए। संभव हो तो कुछ दिनों के लिए गाँव की ओर निकल जाएँ या किसी प्राकृतिक स्थान की सैर को निकल पड़ें। इसका हमारे मन पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। हमें ऊर्जा और स्फूर्ति मिलती है और लौटकर दुगुने उत्साह से अपने काम पर लग जाते हैं।

इरफ़ान – यदि हम अपने घर के आस-पास या गमलों में पेड़-पौधे लगा लें, तो कैसा रहेगा?

राकेश – हाँ, बहुत अच्छा विचार है। पेड़-पौधों से हवा शुद्ध होती है। वातावरण हरा-भरा रहता है, आँखों की रोशनी बढ़ती है। अपने हाथ से लगाए पेड़-पौधों को बढ़ते, फूलते-फलते देखने से मन प्रसन्न रहता है इसलिए माना जाता है कि मनुष्य प्रकृति के जितना निकट रहेगा, उतना ही स्वस्थ रहेगा।

इरफ़ान – ठीक है, मैं आज से तुम्हारी सलाह मानकर ही चलूँगा। फिर देखता हूँ, बीमारी कैसे आती है!

18.2 बोध-प्रश्न

1. दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर खाली जगह लिखिए :

(i) अब डॉक्टर भी दवाओं की अपेक्षा .... लेने पर बल देने लगे हैं।

(क) प्रचलित भोजन (ख) संतुलित आहार

(ग) पौष्टिक दालें (घ) हरी सब्ज़ियाँ

(ii) हम बुरे विचार न आने दें तो हमारा .... स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा।

(क) मानसिक (ख) पारिवारिक

(ग) सामाजिक (घ) निजी

(iii) .... से मन और शरीर दोनों स्वस्थ रहते हैं।

(क) दवाइयों (ख) योगासन

(ग) अंकुरित अनाज (घ) नहाने

18.3 आइए समझें

18.3.1 अंश–1

आइए, इस संवाद के पहले अंश को एक बार फिर से पढ़ें।

"क्या हालत .... हमें बीमार कर देते हैं।"

यह तो आप समझ ही गए हैं कि यह संवाद दो मित्रों के बीच है। इरफ़ान का स्वास्थ्य ठीक नहीं है और

राकेश उसे स्वस्थ जीवन के कुछ सूत्र समझा रहा है। उसका कहना है कि कुछ दवाइयाँ रोगों से छुटकारा दिलाती अवश्य हैं किंतु अपना रहन-सहन स्वच्छ हो और हम संतुलित आहार लें, तो रोग हमें घेरेंगे ही नहीं। हमें अनेक प्रकार के पौष्टिक तत्त्वों की ज़रूरत होती है, जैसे– कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन, वसा, विटामिन, खनिज, लवण, जल आदि। ये चीज़ें हमें अपने भोजन से भी मिल जाती हैं। जिस भोजन से हमें हमारे शरीर की ज़रूरत के अनुसार ये तत्त्व मिल जाते हैं; वही संतुलित आहार कहा जाता है। आप इसे संतुलित आहार के इस चार्ट से भी समझ सकते हैं। चार्ट में दिए पाँचों समूहों में से प्रतिदिन भोजन में कुछ-न-कुछ अवश्य लिया जाए।

हमें शरीर की सफ़ाई पर भी ध्यान देना चाहिए; जैसे– दाँत साफ़ करना, नाखून व बाल न बढ़ने देना, रोज़ नहाना, साफ़ कपड़े पहनना आदि। शारीरिक गंदगी से भी बीमारियाँ पनपती हैं। सफ़ाई होगी तो हम बीमार कम पड़ेंगे।

पाठगत प्रश्न-18.1

1. **सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(i) रोगों से बचा जा सकता है, यदि हम-

(क) दवाइयाँ खाएँ ☐ (ख) संतुलित आहार लें ☐

(ग) भोजन में प्रोटीन की मात्रा बढ़ा लें ☐ (घ) अनाज खूब खाएँ ☐

(ii) निजी सफ़ाई का अर्थ है-

(क) शरीर की सफ़ाई ☐ (ख) दाँतों की सफ़ाई ☐

(ग) नाखून की कटाई ☐ (घ) उपर्युक्त सभी ☐

18.3.2 अंश-2

अब पाठ के बाकी हिस्से को अंत तक पढ़ लेते हैं।

"मेरे पिता जी .... कैसे आती है!"

पहली इकाई में संतुलित आहार और स्वच्छ रहन-सहन की बात हुई। इस इकाई में इरफ़ान मानसिक स्वास्थ्य की बात करता है। दोनों मित्रों की बातचीत से योगासन और ध्यान का महत्त्व सिद्ध होता है। योगासन वैज्ञानिक क्रिया है। इनसे शरीर ही नहीं, मन भी स्वस्थ रहता है। हम शांत रहते हैं और एकाग्रता बनी रहती है। आजकल योग का बहुत प्रचार है। कहावत है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है इसलिए योगासनों का अभ्यास करना चाहिए। इन्हें किसी अच्छे जानकार से ही सीखना चाहिए।

पाठ में आगे प्रकृति, पर्यावरण और उसका स्वास्थ्य पर प्रभाव समझाया गया है। प्राचीन संस्कृतियाँ नदियों के तटों पर पनपीं। आज भी अधिकतर तीर्थ नदी, झील या समुद्र तट पर हैं। लोग नदियों, वनों और पर्वतों की यात्रा पर निकलते हैं। इससे उनका मन खुश रहता है। इससे यह पता चलता है कि हमारे शरीर और मन का प्रकृति से सीधा संबंध है इसलिए हमें पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए। पर्यावरण साफ़-सुथरा होगा, तो हमारा स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा।

चित्र 18.4

इस पाठ में यह राय भी दी गई है कि समय मिले तो किसी गाँव या पर्यटन स्थल की यात्रा पर जाना चाहिए। इससे हमारा शरीर ताज़गी व स्फूर्ति का अनुभव करता है और हम नए जोश के साथ फिर से कार्य में लग जाते हैं। यह एक प्रकार की ऊर्जा है, जो हमें पर्यटन से मिलती है। लौटने पर हम दुगुनी फुर्ती से काम करते हैं। हमें कुएँ, झील, नदी आदि जल-स्रोतों की रक्षा करनी चाहिए और उन्हें प्रदूषण से बचाना चाहिए। पर्यावरण की रक्षा के अनेक उपाय हैं। हम गमलों में या घरों के आस-पास पौधे लगाकर भी पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं। पेड़-पौधों से हवा स्वच्छ होती है और उन्हें देखकर हमारा मन भी प्रसन्न रहता है। मनुष्य जितना प्रकृति के नज़दीक रहेगा, उतना ही स्वस्थ रहेगा।

पाठगत प्रश्न-18.2

1. निम्नलिखित कथनों में से सही कथन के आगे (✓) और गलत के आगे (✗) का निशान लगाइए :

(i) मैदा की जगह चोकर के आटे की रोटी पौष्टिक होती है। ( )

(ii) भोजन किसी भी समय किया जा सकता है। ( )

(iii) योगासन के अभ्यास से चित्त में एकाग्रता आती है। ( )

(iv) योगासन की मुद्राएँ सीखकर ही उनका अभ्यास किया जाना चाहिए। ( )

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) किसी पर्यटन-स्थल की यात्रा करनी चाहिए–

(क) स्फूर्ति प्राप्त करने के लिए ☐ (ख) शरीर को साफ़ रखने के लिए ☐

(ग) संक्रमण से बचने के लिए ☐ (घ) पर्यावरण से बचने के लिए ☐

(ii) पेड़-पौधों से–

(क) हवा स्वच्छ होती है ☐ (ख) हमारा मन प्रसन्न होता है ☐

(ग) फल-फूल की प्राप्ति होती है ☐ (घ) उपर्युक्त सभी ☐

18.3 भाषा-प्रयोग

यह पाठ संवाद के रूप में है। संवाद खड़ी बोली में हैं। चूँकि संवाद का विषय स्वास्थ्य है, अत: सीधे-सीधे मतलब की बात की गई है। यह अवश्य ध्यान रखा गया है कि ऐसे शब्दों का प्रयोग न किया जाए, जिन्हें समझने में कठिनाई हो।

उपसर्ग

शब्दों के वे अंश, जो शब्द के शुरू में लगकर नया शब्द बनाते हैं, 'उपसर्ग' कहलाते हैं। जिस शब्द में उपसर्ग लगता है, उस शब्द का अर्थ भी बदल जाता है; जैसे-

अ + धर्म = अधर्म – 'धर्म' से पहले 'अ' जुड़कर नया शब्द 'अधर्म' बन गया और उसका अर्थ भी बदल गया। 'अ' उपसर्ग अधिकतर निषेध के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

क + पूत = कपूत – 'पूत' से पहले 'क' जुड़कर नया शब्द 'कपूत' बन गया। उसका अर्थ भी बदल गया। 'क' उपसर्ग अधिकतर बुरे के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

आइए, अब संस्कृत, हिंदी और उर्दू के कुछ उपसर्गों को जानें-

उपसर्ग तीन प्रकार के होते हैं :

1. संस्कृत उपसर्ग और उनसे बने शब्द-

अधि – अधिनायक, अधिवक्ता, अधिपति, अधिकार, अधिराज

अति – अतिवृष्टि, अतिरिक्त, अतिकाल, अतिशय, अत्यंत

अनु – अनुवाद, अनुभव, अनुकरण, अनुग्रह, अनुस्वार

अप – अपयश, अपशब्द, अपमान, अपव्यय, अपहरण

सु – सुगम, सुमार्ग, सुअवसर, सुलभ, सुकर्म

2. हिंदी उपसर्ग और उनसे बने शब्द-

अ – अभाव, अकारण, अज्ञान, अलग, अथाह

अध – अधपका, अधखिला, अधमरा, अधसेर, अधकच्चा

नि – निडर, निहत्था, निकम्मा, निधड़क, निबंध

दु – दुबला, दुसाध्य, दुकाल, दुस्तर

उन – उन्तीस, उनचास, उनसठ, उन्नासी

3. उर्दू उपसर्ग और उनसे बने शब्द-

ब – बखूबी, बनाम, बदौलत, बदस्तूर, बगैर

बा – बाअदब, बाकायदा, बातमीज़, बाइज़्ज़त, बामौका

बद – बदतमीज़, बदनाम, बदसूरत, बदबू, बदमाश

हम – हमसफ़र, हमराही, हमराज़, हमवतन, हमदर्द

सर – सरपंच, सरहद, सरनाम, सरकार, सरताज

प्रत्यय

शब्दांश शब्द के पहले ही नहीं, अंत में भी लगते हैं। प्रत्यय वे शब्दांश हैं जो शब्द के पीछे लगकर उसका अर्थ बदल देते हैं; जैसे–

स्वच्छ + ता = स्वच्छता

वातानुकूल + इत = वातानुकूलित

आइए, प्रत्यय लगाकर कुछ शब्द लिखें–

अपना + पन = अपनापन

बल + वान = बलवान

बूझना + अक्कड़ = बुझक्कड़

तैरना + आक = तैराक

पंजाब + ई = पंजाबी

राष्ट्र + ईय = राष्ट्रीय

लड़ना + आकू = लड़ाकू

दानव + ता = दानवता

धर्म + इक = धार्मिक

लड़ना + आई = लड़ाई

रसोई + इया = रसोइया

मुंबई + इया = मुंबइया

गढ़ना + अंत = गढ़ंत

उड़ाना + आऊ = उड़ाऊ

18.5 आपने क्या सीखा

- शरीर के लिए आवश्यक तत्त्वों की पूर्ति के लिए संतुलित आहार लेना आवश्यक है।
- हमारा रहन-सहन स्वच्छ होना चाहिए।
- निजी सफ़ाई का ध्यान रखना ज़रूरी है; जैसे– बाल और नाखून की कटाई, शरीर की सफ़ाई आदि।
- योगासन और ध्यान से हमारा मन और शरीर स्वस्थ रहता है।
- हमें प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए और यथासंभव प्रकृति के निकट रहना चाहिए।
- जो शब्दांश शब्द के शुरू में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं 'उपसर्ग' कहलाते हैं और जो शब्दांश शब्द के अंत में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं, 'प्रत्यय' कहलाते हैं।

18.6 योग्यता-विस्तार

- हमारे खाने-पीने में जो चीज़ें होती हैं, रंगों के अनुसार उनकी सूची बनाइए।
- किसी जानकार से योगासन सीखिए और उनका अभ्यास कीजिए।
- संतुलित भोजन का अर्थ है, एक व्यक्ति के लिए उपयुक्त मात्रा में दूध-दही, दालें, फल, अनाज आदि, जिससे शरीर में उचित मात्रा में पोषक तत्त्व पहुँचें। ये पोषक तत्त्व हैं– विटामिन, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, खनिज लवण तथा जल। इनसे शरीर ठीक ढंग से काम करता रहता है।

- भोजन को पचाने के लिए जहाँ कार्य करना आवश्यक है। वही आराम करना भी। इसके लिए रात में सात-आठ घंटे की अच्छी नींद काफ़ी है।

18.7 पाठांत प्रश्न

1. **संतुलित आहार किसे कहते हैं?**

....

2. **शरीर की सफ़ाई पर क्यों ध्यान देना चाहिए?**

....

3. **योगासन करने के क्या लाभ है?**

....

4. **निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग अलग कीजिए :**

अपमान	–	....	अभिमान	–	....
अस्वस्थ	–	....	प्रदेश	–	....
अप्रिय	–	....	सरपंच	–	....

5. **निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए :**

कंजूस	....	समझना	....
सरल	....	कठिन	....
लिखना	....	चाँद	....

6. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

कहा जाता है कि 'पहला सुख, नीरोगी काया'। यानी शरीर का स्वस्थ होना जीवन का सबसे बड़ा सुख है। इस सुख के लिए ज़रूरी है कि हम शरीर का ध्यान रखें। इसे नीरोग बनाए रखें। संतुलित और पौष्टिक भोजन करें। शरीर से मेहनत वाले काम करें। हमारी खाने की चीज़ें कई रंगों की होती हैं। अनाज, सब्ज़ियाँ, फल कई रंगों के होते हैं। आमतौर पर हमारे खाने की चीज़ें पीले, सफेद, हरे, बैंगनी, काले, भूरे, लाल रंगों की होती हैं। हमारे शरीर के लिए सभी रंगों की चीजें ज़रूरी हैं। वैज्ञानिक कहते हैं कि हम अपने भोजन में कम-से-कम चार रंग की चीजें जरूर शामिल करें। इससे हमारे शरीर को सभी पोषक तत्त्व मिल जाएँगे।

(i) 'पहला सुख' किसे कहा गया है?

....

(ii) आमतौर पर हमारे भोजन में कितने रंगों की चीज़ें शामिल होती हैं?

....

(iii) भोजन में कम-से-कम चार रंगों की चीज़ें होने से क्या फ़ायदा होता है?

....

(iv) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

....

18.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (i) (ख) संतुलित आहार

   (ii) (क) मानसिक

   (iii) (ख) योगासन

पाठगत प्रश्न-18.1

1. (ख) संतुलित आहार लें।
2. (घ) उपर्युक्त सभी।

पाठगत प्रश्न-18.2

1. (i) ✓ (ii) ✗

   (iii) ✓ (iv) ✗

2. (i) (क) स्फूर्ति प्राप्त करने के लिए

   (ii) (घ) उपर्युक्त सभी।

❀ ❀ ❀

19

हॉकी का जादूगर

आप यह तो जानते ही होंगे कि हॉकी भारत का राष्ट्रीय खेल है। आज क्रिकेट की धूमधाम में हॉकी की चमक थोड़ी धूमिल हो गई है लेकिन एक समय ऐसा था, जब हॉकी के खिलाड़ी ध्यानचंद को पूरी दुनिया जानती थी। उन्होंने ओलंपिक में हॉकी खेलकर कई स्वर्ण पदक जीते थे। वे दुनिया में हॉकी के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी थे। लोग उन्हें 'हॉकी का जादूगर' मानते थे। आइए, इस पाठ में उन्हीं के बारे में पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- हॉकी के जादूगर ध्यानचंद के जीवन के बारे लिख सकेंगे;
- ध्यानचंद की प्रतिभा, परिश्रम और निष्ठापूर्ण ढंग से हॉकी खेलने की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- ध्यानचंद की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों का उल्लेख सकेंगे;
- वर्तनी की गलतियाँ पहचानकर उसका शुद्ध रूप में प्रयोग कर सकेंगे।

करके सीखिए

चित्र 19.1 : ध्यानचंद हॉकी खेलते हुए

चित्र 19.2 : सचिन तेंदुलकर क्रिकेट खेलते हुए

1. ध्यानचंद और सचिन तेंदुलकर में कौन-सी बात समान हैं, लिखिए।

....

2. दोनों खिलाड़ियों के जीवन में मुख्य दो अंतर क्या हैं? लिखिए।

....

....

19.1 मूल पाठ

मेजर ध्यानचंद भारतीय हॉकी टीम के कप्तान थे। उनका नाम भारत एवं विश्व हॉकी के क्षेत्र में बेहतरीन खिलाड़ियों में शुमार किया जाता है। ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय हॉकी टीम के वे तीन बार सदस्य रहे। ध्यानचंद हॉकी के ऐसे खिलाड़ी रहे हैं, जिन्होंने दुनिया में अपनी खास कला से बेहद ख्याति प्राप्त की है।

जीवन-परिचय

मेजर ध्यानचंद का जन्म 29 अगस्त, 1905 में प्रयाग (इलाहाबाद) में एक राजपूत परिवार में हुआ था। उनके

पिता भारतीय सेना में सूबेदार थे और हॉकी खेला करते थे। उनके दो भाई थे मूलसिंह और रूपसिंह। रूपसिंह भी हॉकी के खिलाड़ी थे। ध्यानचंद ने कक्षा 6 तक की पढ़ाई की थी। वे कई स्थानों पर रहे। अंत में झाँसी में बस गए।

बाल्यकाल में उनकी खेलों के प्रति कोई दिलचस्पी नहीं थी, हालाँकि वे कुश्ती अधिक पसंद करते थे। ध्यानचंद अपने दोस्तों के साथ पेड़ से लकड़ी तोड़ते थे और हॉकी बनाकर कपड़े की गेंद से खेला करते थे। चौदह साल की उम्र में वे अपने पिता के साथ एक हॉकी मैच देखने गए। उस मैच में एक टीम दो गोल से पिछड़ रही थी। ध्यानचंद ने अपने पिता से कहा कि मैं हारने वाली टीम की तरफ़ से खेलना चाहता हूँ। एक आर्मी ऑफ़िसर ने उन्हें ऐसा करने की इजाज़त दे दी। ध्यानचंद ने चार गोल करके हारती हुई टीम को जिता दिया।

1922 में 16 साल की उम्र में ध्यानचंद 'पंजाब रेजीमेंट' में भर्ती हो गए। पंकज गुप्ता उनके पहले कोच थे। उन्होंने कहा था कि ध्यानचंद एक दिन हॉकी में चंद्रमा की तरह चमकेगा।

उपलब्धियाँ – ध्यानचंद की हॉकी की कला के जितने किस्से हैं, उतने शायद ही दुनिया में किसी अन्य खिलाड़ी के होंगे। एक बार झेलम में पंजाब रेजीमेंट का फ़ाइनल मैच था। उनकी टीम दो गोल से पिछड़ रही थी। ध्यानचंद ने लगातार तीन गोल किए और अपनी टीम को जीत दिलाई। उस दिन के बाद ध्यानचंद को 'हॉकी का विज़र्ड' कहा जाने लगा।

1925 ई० में पाँच राज्यों का एक टूर्नामेंट हुआ, जिसमें ओलंपिक के लिए टीम का चयन करना था। इसमें अच्छा प्रदर्शन करने के कारण ध्यानचंद को अंतर्राष्ट्रीय हॉकी में जगह मिली।

चित्र 19.3

अंतर्राष्ट्रीय खेलों में

13 मई 1926, ई० को पहली बार ध्यानचंद भारतीय हॉकी टीम के साथ न्यूज़ीलैंड के दौरे पर गए, जिसमें एक मैच में भारत ने बीस गोल किए। अकेले ध्यानचंद ने ही दस गोल किए थे। भारत ने इक्कीस मैच खेले जिनमें से अट्ठारह जीते, एक हारे तथा दो ड्रॉ रहे। कुल एक सौ गोल किए। 27 मई, 1932 ई० को श्रीलंका में दो मैच खेले गए। एक 21–0 से और दूसरा 10–0 से जीते गए। सन् 1935 ई० में टीम फिर न्यूज़ीलैंड गई। वहाँ उनचास मैच खेले गए जिसमें अड़तालिस मैचों में जीत हुई और एक मैच वर्षा के कारण ड्रॉ हुआ। ध्यानचंद ने अंतर्राष्ट्रीय खेलों में चार सौ से अधिक गोल किए।

ओलंपिक

एम्सटर्डम (1927 ई०)

1928 में एम्सटर्डम ओलंपिक खेलों में भारतीय टीम ने पहली बार भाग लिया। इसमें भारतीय टीम पहले सभी मुकाबले जीत गई।

ऑस्ट्रिया को 6–0 से, बेल्जियम को 9–0 से, डेनमार्क को 5–0 से, स्विटज़रलैंड को 6–0 से तथा फ़ाइनल में हॉलैंड को 3–0 से हराकर भारत विश्वभर में हॉकी का चैंपियन बन गया।

लॉस एंजिल्स (1932 ई०)

1932 ई० में लॉस एंजिल्स ओलंपिक में दो सौ बासठ में से एक सौ एक गोल अकेले ध्यानचंद ने किए। निर्णायक मैच में भारत ने अमरीका को 24–1 से हराया था। तब एक अमरीकी समाचारपत्र ने लिखा था कि भारतीय हॉकी टीम तो पूर्व से आया तूफ़ान थी। उसने अपने वेग से अमरीकी टीम के ग्यारह खिलाड़ियों को कुचल दिया।

बर्लिन (1936 ई०)

1936 ई० के बर्लिन ओलंपिक खेलों में ध्यानचंद को भारतीय टीम का कप्तान चुना गया। 17 जुलाई को जर्मन टीम के साथ एक अभ्यास मैच खेला गया। भारत इसमें 4–1 से हार गया। इस हार से ध्यानचंद को बहुत धक्का लगा। इस हार को वे अपने जीते जी नहीं भुला सके। उनके कुछ साथियों को तो भोजन भी अच्छा नहीं लगा। बहुत से साथियों को रातभर नींद नहीं आई। भारत का पहला मुकाबला हंगरी से था। जिसमे 4–0 से विजय मिली। भारत ने जापान को 9–0 से हराया। फ़्रांस को दस गोलों से हराया। 14 अगस्त को जर्मन टीम से मुकाबला था, जो बारिश के कारण 15 अगस्त को खेला गया था। अभ्यास मैच में जर्मन ने भारत को हराया था, यह बात सभी के मन में बुरी तरह घर कर गई थी। फिर गीले मैदान की प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण खिलाड़ी निराश थे। टीम मैनेजर पंकज गुप्ता को एक युक्ति सूझी। वे खिलाड़ियों को

ड्रैसिंग रूम में ले गए। उन्होंने तिरंगा झंडा सबके सामने रख दिया और कहा कि इसकी लाज अब तुम्हारे हाथ है। सबने तिरंगे को श्रद्‌धापूर्वक सलाम किया। वीर सैनिक की तरह मैदान में उतर पड़े। भारतीय खिलाड़ी जमकर खेले और जर्मनी को 8–1 से रौंद दिया। उस दिन सचमुच तिरंगे की लाज रह गई। उस समय कौन जानता था कि 15 अगस्त को ही भारत का स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा। इस मैच में पहले हाफ़ में भारत केवल एक गोल कर पाया था। ध्यानचंद ने इंटरवल में अपने जूते उतारकर फेंक दिए और नंगे पैरों से खेले।

बर्लिन ओलंपिक में हिटलर ने ध्यानचंद के खेल से प्रभावित होकर उन्हें अपनी सेना में कर्नल का पद देने को कहा, लेकिन ध्यानचंद ने उसे ठुकरा दिया। उस समय सिर्फ़ हिटलर ही नहीं, जर्मनी के सभी हॉकी प्रेमियों के दिलो–दिमाग पर केवल एक ही नाम छाया था, ध्यानचंद। बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद की हॉकी में मेगनेट होने की बात कही गई थी। एक जर्मन न्यूज़पेपर में छपा था– ओलंपिक कॉम्प्लैक्स में एक मैजिक शो भी है। 'The olympic complex now has a magic show too'. अगले दिन बर्लिन में सभी जगह पोस्टर्स लगे थे– "Visit the Hockey Stadium to watch the Indian magician Dhyanchand in action." भारतीय हॉकी के जादूगर ध्यानचंद को देखने के लिए लोग हॉकी स्टेडियम में आए।

एक बार मेजर ध्यानचंद हॉकी खेल रहे थे। ध्यानचंद जब भी शॉट मारते, गेंद गोल में नहीं जाती थी। ध्यानचंद ने रैफ़री से कहा कि गोल पोस्ट की नाप सही नहीं है। जब गोल पोस्ट की जाँच की गई तो वह गोल पोस्ट अंतर्राष्ट्रीय माप की तुलना में तीन इंच छोटा निकला। 1936 ई० में जर्मन के साथ खेलते समय गोलकीपर से झगड़े के कारण उनका दाँत टूट गया। ध्यानचंद ने इलाज कराया और उनको हराकर सबक सिखाया।

डॉन ब्रैडमैन ने 1935 ई० में ध्यानचंद का खेल देखकर उनसे मुलाकात की। डॉन ब्रैडमैन ने कहा था कि ध्यानचंद क्रिकेट में रन बनाने की तरह गोल करते हैं। नीदरलैंड में हॉकी अधिकारियों ने ध्यानचंद की हॉकी को तोड़कर देखा था कि इसमें कहीं मैगनेट तो नहीं है।

ध्यानचंद अपने खेल की वजह से 1932 ई० में नायक, 1937 ई० में कप्तानी के बाद सूबेदार, 1943 ई० में द्‌वितीय महायुद्‌ध के बाद लैफ्टीनेंट और अंत में 1948 ई० में भारत की स्वतंत्रता के बाद मेजर बना दिए गए।

सन् 1956 ई० में ध्यानचंद को 'पद्‌मभूषण' से सम्मानित किया गया। भारतीय ओलंपिक संघ ने ध्यानचंद को 'शताब्दी का खिलाड़ी' घोषित किया है। 29 अगस्त को ध्यानचंद के जन्मदिन को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' घोषित किया गया। डाक विभाग ने एक डाक टिकट उनके नाम पर जारी किया। ध्यानचंद के नाम पर एक राष्ट्रीय स्टेडियम का भी नाम रखा गया। वियना तथा ऑस्ट्रिया ने उनकी प्रतिमा में चार हाथ तथा इन हाथों में चार हॉकी दिखाकर उन्हें सम्मानित किया।

लंदन में परिवहन विभाग ने ओलंपिक 'लीजेंड मैप' जारी किया है, जिसमें तीन सौ इकसठ ट्यूब स्टेशन हैं। इनमें छह स्टेशन टॉप हॉकी प्लेयर्स के नाम पर हैं, उनमें एक स्टेशन ध्यानचंद के नाम पर भी है।

3 दिसम्बर, 1979 ई० को लीवर कैंसर के कारण एम्स में उनका निधन हो गया।

शब्दार्थ

ख्याति	=	प्रसिद्ध	वेग	=	तेज़
बाल्यकाल	=	बचपन	युक्ति	=	उपाय
विज़र्ड	=	चेहरा, पर्याय	ड्रेसिंग रूम	=	कपड़े बदलने की जगह
प्रतिकूल	=	विपरीत, उल्टा	श्रद्धापूर्वक	=	आदरपूर्वक

19.2 बोध-प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मेजर ध्यानचंद बचपन में किसकी गेंद से हॉकी खेलते थे?

(क) रबड़ की ☐ (ख) कपड़े की ☐

(ग) चमड़े की ☐ (घ) किरमिच की ☐

2. ध्यानचंद की प्रशंसा क्रिकेट के किस महान खिलाड़ी ने की थी?

(क) लाल अमरनाथ ☐ (ख) डॉन ब्रैडमैन ☐

(ग) सुनील गावस्कर ☐ (घ) ब्रायन लारा ☐

3. बर्लिन ओलंपिक मैच में भारत ने जर्मनी को किस तिथि को हराया?

(क) 17 जुलाई ☐ (ख) 15 अगस्त ☐

(ग) 14 अगस्त ☐ (घ) 29 अगस्त ☐

19.3 आइए समझें

19.3.1 अंश–1

मेजर ध्यानचंद .... जगह मिली।

इस पाठ में हॉकी के महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के बारे में बहुत-सी दिलचस्प जानकारियाँ दी गई हैं। बचपन में वे पहलवानी पसंद करते थे लेकिन कभी-कभी दोस्तों के साथ पेड़ की डाली और कपड़े की

गेंद से हॉकी भी खेला करते थे। बचपन में पिता के साथ हॉकी मैच देखते समय उन्होंने हारती हुई टीम की ओर से खेलने की इच्छा जताई और फिर उस हारती हुई टीम के साथ खेलते हुए उसे जिता दिया। सोलह साल की उम्र में वे पंजाब रेजीमेंट में भर्ती हो गए। पंकज गुप्ता उनके पहले कोच थे। ध्यानचंद में हॉकी खेलने की अद्‌भुत प्रतिभा थी। वे 'हॉकी के जादूगर' कहे जाते थे। 1925 ई० में ओलंपिक के लिए जब टीम का चयन हो रहा था, उन्होंने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया और वे चुन लिए गए। उनकी टीम ने ओलंपिक में तीन बार स्वर्ण पदक जीता।

पाठगत प्रश्न–19.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. ध्यानचंद बचपन में सबसे अधिक पसंद करते थे–

   (क) क्रिकेट ☐ (ख) फुटबॉल ☐

   (ग) कबड्‌डी ☐ (घ) कुश्ती ☐

2. पंकज गुप्ता ने ध्यानचंद के खेल को देखकर कहा था कि एक दिन यह–

   (क) चंद्रमा की तरह चमकेगा ☐ (ख) सूर्य की तरह चमकेगा ☐

   (ग) दीपक की लौ की तरह चमकेगा ☐ (घ) हीरे की तरह चमकेगा ☐

19.3.2 अंश–2

13 मई, 1926 ई० .... निधन हो गया।

ध्यानचंद 13 मई, 1926 ई० को पहली बार देश से बाहर न्यूज़ीलैंड हॉकी खेलने के लिए गए। न्यूज़ीलैंड के खिलाफ़ भारतीय टीम ने बीस गोल किए जिसमें दस गोल अकेले ध्यानचंद ने किए थे। श्रीलंका के साथ खेले गए दो मैचों में 21–0 और 10–0 से जीत हासिल की। ध्यानचंद ने अंतर्राष्ट्रीय खेलों में चार सौ से अधिक गोल किए। ध्यानचंद ने तीन ओलंपिक खेलों में हिस्सा लिया। 1928 ई० में एम्सटर्डम में, 1932 ई० में लॉस एंजिल्स में और 1936 ई० में बर्लिन में।

एम्सटर्डम ओलंपिक में भारत ने किसी भी टीम को एक भी गोल अपने विरुद्ध नहीं करने दिया और विश्व चैंपियन बना। लॉस एंजिल्स ओलंपिक में दो सौ बासठ गोल में से एक सौ एक गोल ध्यानचंद ने किए थे। यहाँ भारत ने अमेरिका को 24–1 से हराया था।

बर्लिन ओलंपिक में भी भारतीय टीम ने जबरदस्त प्रदर्शन किया और 15 अगस्त, 1936 ई० को जर्मनी को 8–1 से पराजित किया। उस समय ऐसी कोई टीम विश्व में नहीं थी जो भारत को हॉकी मैच में हरा सके। बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद के खेल से प्रभावित होकर हिटलर उन्हें सेना में कर्नल का पद देना चाहता

था लेकिन ध्यानचंद ने उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। महान क्रिकेटर डॉन ब्रैडमैन ने कहा था, "ध्यानचंद क्रिकेट में रन बनाने की तरह गोल करते हैं।" ध्यानचंद सेना में भर्ती तो नायक के पद पर हुए थे लेकिन 1948 ई० में उन्हें मेजर का पद प्रदान किया गया। सन् 1956 ई० में उन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया। इनके जन्म दिवस 29 अगस्त को 'राष्ट्रीय खेल दिवस' घोषित किया गया है। वियना और ऑस्ट्रिया ने उनकी प्रतिमा में चार हाथ और उनमें चार हॉकी दिखाकर उनका सम्मान किया है। भारतीय डाक विभाग ने उनके नाम का एक डाक टिकट भी जारी किया है। इतना ही नहीं, इस महान खिलाड़ी के सम्मान में लंदन के परिवहन विभाग ने एक ट्यूब स्टेशन का नाम 'ध्यानचंद स्टेशन' रखा है।

पाठगत प्रश्न-19.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

1. किस स्थान के परिवहन विभाग ने ध्यानचंद के नाम पर स्टेशन का नाम रखा है?

   (क) नीदरलैंड ☐ (ख) न्यूज़ीलैंड ☐

   (ग) ऑस्ट्रिया ☐ (घ) लंदन ☐

2. "ध्यानचंद क्रिकेट में रन बनाने की तरह गोल करते हैं" यह बात कही-

   (क) पंकज गुप्ता ने ☐ (ख) डॉन ब्रैडमैन ने ☐

   (ग) हिटलर ने ☐ (घ) मूलसिंह ने ☐

3. लॉस एंजिल्स ओलंपिक में भारतीय हॉकी टीम ने किस देश की टीम को (21-1) हराया था?

   (क) अमरीका ☐ (ख) हॉलैंड ☐

   (ग) फ़्रांस ☐ (घ) आस्ट्रिया ☐

19.4 भाषा-प्रयोग

यद्यपि इस पाठ में सरल-सुबोध भाषा का प्रयोग किया गया है तथापि कुछ ऐसे शब्दों का भी प्रयोग किया गया है, जिनका प्रयोग करते समय हम कभी-कभी लापरवाह होते हैं; जैसे- उम्र, भर्ती, दौरा, वर्ष, जर्मन आदि। कुछ लोग उम्र को उमर, भर्ती को भरती, दौरा को दोरा, वर्ष को बरस और जर्मनी को जरमनी लिखते हैं, जो गलत है। भाषा के शुद्ध प्रयोग के लिए वर्तनी की शुद्धता महत्तवपूर्ण है। मौखिक और लिखित भाषा में प्रत्येक शब्द का शुद्ध रूप आवश्यक होता है।

वर्णों के समूह से शब्द बनता है। प्रत्येक वर्ण का सही क्रम से प्रयोग होने पर ही शब्द बनते हैं।

वर्तनी की सामान्य अशुद्धियाँ कई तरह की हो सकती हैं। आइए, उन शब्दों की सही वर्तनी को देखें जिनके प्रयोग में प्राय: गलती होती है-

स्वरों के प्रयोग की अशुद्धियाँ

अशुद्ध		शुद्ध	अशुद्ध		शुद्ध
आधीन	–	अधीन	पती	–	पति
अकाश	–	आकाश	यूग	–	युग
हिंदूस्तान	–	हिंदुस्तान	ओरत	–	औरत
कोरव	–	कौरव	हानी	–	हानि

ड़ ढ़ संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध		शुद्ध	अशुद्ध		शुद्ध
सढ़क	–	सड़क	पेड	–	पेड़
बूढा	–	बूढ़ा	पढना	–	पढ़ना
चढाई	–	चढ़ाई	लडकी	–	लड़की
घडी	–	घड़ी	ढ़क्कन	–	ढक्कन
रोड़	–	रोड			

अनुस्वार तथा आनुनासिक संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध		शुद्ध	अशुद्ध		शुद्ध
महंगा	–	महँगा	मां	–	माँ
चांद	–	चाँद	गूंगा	–	गूँगा
हंसी	–	हँसी	बांध	–	बाँध
ढँकना	–	ढकना	फ़ांसी	–	फ़ाँसी

अन्य अशुदिधयाँ

अशुद्ध		शुद्ध	अशुद्ध		शुद्ध
रिशि	–	ऋषि	असोक	–	अशोक
रिण	–	ऋण	नमश्कार	–	नमस्कार
मितर	–	मित्र	मच्छड़	–	मच्छर
छमा	–	क्षमा	कौपी	–	कॉपी
डोक्टर	–	डॉक्टर	बंदना	–	वंदना
परेमचंद	–	प्रेमचंद	इस्टेशन	–	स्टेशन

19.5 आपने क्या सीखा

- ध्यानचंद देशप्रेमी एवं खेल के प्रति समर्पित व्यक्ति थे।

- अपने हुनर और मेहनत के बल पर कोई भी प्रसिद्धि प्राप्त कर सकता है।
- हम अपने कार्यों से अपना और राष्ट्र का नाम रोशन कर सकते हैं।
- वर्तनी के शुद्ध रूप को समझकर उसका प्रयोग करना चाहिए।

19.6 योग्यता-विस्तार

हॉकी के खेल में ध्यानचंद के अतिरिक्त अन्य सुप्रसिद्ध खिलाड़ी रहे हैं - बलबीर सिंह, मौ. शाहिद, धनराज पिल्लै, अजितपाल सिंह, सरदारा सिंह इत्यादि।

केवल पुरुष खिलाड़ी ही नहीं, भारतीय महिला हॉकी टीम ने भी खेल मंच पर उतरना और उभरना शुरू कर दिया है। भारतीय महिला हॉकी टीम की खिलाड़ियों में से कुछ के नाम हैं- ऋतु रानी, जसप्रीत कौर, सविता पूनिया, सुशीला चानु पुखरंबम, अमनदीप कौर, पूनम बरला इत्यादि।

19.7 पाठांत प्रश्न

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) ध्यानचंद द्वारा बचपन में कपड़े की गेंद से हॉकी खेलने का कारण क्या था?

(क) गरीबी ☐ (ख) शौक ☐

(ग) गेंद की कमी ☐ (घ) डर ☐

(ii) ध्यानचंद का वर्षा से गीले मैदान में नंगे पैर खेलना क्या दर्शाता है?

(क) अनुशासनहीनता ☐ (ख) प्रतिबद्धता ☐

(ग) वीरता ☐ (घ) जूते की कमी ☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) बचपन में ध्यानचंद हॉकी कैसे खेला करते थे?

....

(iii) लॉस एंजिल्स 1932 ई० के ओलंपिक में अमरीका के समाचारपत्र में क्या छपा था?

....

(iii) बर्लिन में फ़ाइनल मैच के दिन टीम के निराश होने पर कोच पंकज गुप्ता ने क्या किया?

....

(iv) बर्लिन ओलंपिक के समय जर्मन न्यूज़पेपर में क्या छपा था?

....

(v) 'राष्ट्रीय खेल दिवस' कब तथा क्यों मनाया जाता है?

....

4. अगर आपको खेलने का अवसर मिले, तो आप कौन-सा खेल पसंद करेंगे और क्यों? तर्क सहित उत्तर लिखिए।

....

....

....

....

....

....

5. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी सही करके लिखिए :

(i)	आर्शीवाद	:	....	(ii)	सुसील	:	....
(iii)	सुरेन्दर	:	....	(iv)	प्रतंत्र	:	....
(v)	परियावरण	:	....	(vi)	सांस	:	....
(vii)	परीषद	:	....	(viii)	कोष्टक	:	....
(ix)	परीच्छा	:	....				

6. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

बात 1948 ई० के लंदन ओलंपिक की है। भारत को स्वतंत्रता मिली थी और पाकिस्तान भारत से अलग हुआ। हालात बहुत खराब थे। उधर लंदन में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के हालात थे। हॉकी में भारत और पाकिस्तान अलग-अलग ग्रुप में थे। भारत के हॉकी के कप्तान किशनलाल थे। सेमीफ़ाइनल में भारत, पाकिस्तान, इंग्लैंड तथा हॉलैंड पहुँचे। भारत बड़ी मुश्किल हालात में हॉलैंड को 2–1 से हरा पाया, उधर पाकिस्तान को इंग्लैंड ने 2–0 से हरा दिया। अब इंग्लैंड से फ़ाइनल था। क्वीन मौजूद थीं। भारत ने इंग्लैंड को 4–0 से हराया। हमारी टीम में कोई ऐसा आदमी न था, जिसकी

आँखों में आँसू न हों। उसी मुल्क में हम आकर जीते, जिसने हम पर राज किया था। पहली बार विश्व स्तर पर जन-गण-मन बजा। हमें गर्व है, यह इंग्लैंड में हुआ। आज़ाद भारत ने पहली बार दुनिया को दिखा दिया कि हम क्या कर सकते हैं!

(i) 1948 ई० के लंदन ओलंपिक के हालात क्यों खराब थे?

....

(ii) सेमीफ़ाइनल में कौन-कौन सी टीम पहुँची?

....

(iii) फ़ाइनल मैच देखने कौन आया था?

....

(iv) भारत ने इंग्लैंड को कितने गोलों से हराया?

....

(v) इंग्लैंड से मैच जीतने के बाद सबकी आँखों में आँसू क्यों थे?

....

19.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्न

1. (ख) कपड़े की
2. (ख) डॉन ब्रैडमैन
3. (ख) 15 अगस्त

पाठगत प्रश्न-19.1

1. (ख) कुश्ती
2. (क) चंद्रमा की तरह चमकेगा

पाठगत प्रश्न-19.2

1. (घ) लंदन
2. (ख) डॉन ब्रैडमैन
3. (क) अमरीका

❀ ❀ ❀

20

पत्र-लेखन

अकसर हम अपने मन की बातें, परिवार के समाचार, आस-पास की बातें आदि अपने दोस्तों को और परिवारवालों को बताना चाहते हैं। यदि ये हमारे आस-पास होते हैं, तो हम उन्हें बोलकर बता देते हैं; दूर होते हैं, तो फ़ोन करके या पत्र लिखकर बताते हैं। पत्र कई तरह के होते हैं। अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग तरह के पत्र लिखे जाते हैं। आइए, इस पाठ में हम पत्र-लेखन से जुड़ी हुई जानकारी प्राप्त करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- पत्र-लेखन की औपचारिकताओं को पूरा करते हुए पत्र लिख सकेंगे;
- औपचारिक और अनौपचारिक पत्र-लेखन में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- औपचारिक और अनौपचारिक कार्यों के लिए पत्र लिख सकेंगे;
- अपने संबंधियों और मित्रों को विषय के अनुरूप भाषा और उपयुक्त शैली में पत्र लिख सकेंगे।

करके सीखिए

घर में विभिन्न अवसरों पर आए पत्रों को एकत्रित कीजिए और निम्नलिखित जानकारियाँ प्राप्त कीजिए–

1. पत्र कहाँ से आए हैं?
2. उन्हें कब और किसने भेजा है?
3. पत्रों में संबोधन, अभिवादन और समापन किस प्रकार लिखा गया है?
4. पत्र भेजने वाले ने पत्र क्यों भेजा है?

जो जानकारी प्राप्त की, उसकी एक तालिका तैयार कीजिए।

20.1 मूल पाठ

20.1.1 अंश–1

अनौपचारिक पत्र

चित्र 20.1

स्थान → भोपाल

दिनांक → 17 जनवरी, 2016

संबोधन → प्रिय सुशीला

अभिवादन → प्यार।

पत्र की सामग्री →

मैं यहाँ पर कुशल-मंगल हूँ। आशा है, तुम सभी स्वस्थ व प्रसन्न होगे। आशु की पढ़ाई ठीक से चल रही होगी। उसे कहना, मन लगाकर पढ़े, इस बार उसे कक्षा में अच्छा स्थान प्राप्त करना है। अपनी प्यारी बेटी श्यामा का बुखार अब ठीक हो गया होगा। उसके खाने-पीने का विशेष ध्यान रखना। मैं अगले सप्ताह आने का कार्यक्रम बना रहा हूँ। सभी के साथ अपना भी खयाल रखना।

शेष मिलने पर............।

समापन → **तुम्हारा**

राजीव

जिसे पत्र भेजा जा रहा है, उसका पता →

सुशीला भाटिया
10, सुभाष मार्ग
नई दिल्ली-110001

पत्र से हम अपने मन की बातें दूसरों तक पहुँचा सकते हैं।
पत्र मन के भावों का वाहक है।

आपने अभी एक घरेलू पत्र पढ़ा। इस प्रकार के पत्रों की विशेषता है कि वे अपने सगे-संबंधियों या मित्रों को बहुत अपनेपन के साथ लिखे जाते हैं और औपचारिकता से परे होते हैं इसलिए इन्हें अनौपचारिक पत्र भी कहते हैं। इन पत्रों की भाषा सीधी-सरल और सामान्य बोलचाल की होती है। उनमें औपचारिकता की जगह आत्मीयता होती है।

क्या आप बता सकते हैं कि उक्त पत्र

- किसने, किसको लिखा है? कब लिखा है? कहाँ से लिखा है?

जी हाँ, यह पत्र राजीव ने अपनी पत्नी सुशीला को 17 जनवरी, 2016 को भोपाल से लिखा है।

अब आप सोच रहे होंगे कि क्या ये सारी जानकारियाँ देना ज़रूरी है? तो इसका उत्तर है– हाँ; क्योंकि इन्हीं बातों से पता चलता है कि पत्र कहाँ से, कब आया और किसे लिखा गया है। पत्र की सामग्री से पता चलता है कि पत्र क्यों लिखा गया है। इन सभी का पत्र में सुनिश्चित स्थान होता है, जैसा कि आपने ऊपर दिए पत्र में ध्यान दिया होगा। इन पत्रों में संबोधन, अभिवादन और समापन भी सोच-समझकर दिया जाता है। अब आपके मन में सवाल उठ रहा होगा कि यह संबोधन, अभिवादन और समापन क्या है? तो आइए, पहले एक-एक करके इन्हें समझते हैं– छोटा हो या बड़ा, जिसे पत्र लिखा जाता है, उसे कुछ-न-कुछ संबोधित कर पत्र लिखने वाला अपनी बात को कहेगा, यह तो आप मानेंगे न! फिर संबंधों के अनुसार दुआ, सलाम या नमस्कार किया जाता है; जैसे– बड़ों को सादर प्रणाम, मित्रों को नमस्कार, छोटों को प्यार..... आदि। पत्र में यही 'अभिवादन' है और फिर अपने मन की बात विस्तार अथवा संक्षेप में कही जाती है। बात समाप्त होने पर कुछ विशेष शब्दों के साथ पत्र का अंत किया जाता है, जिसे 'समापन' कहते हैं। पत्र में नियमानुसार इन सभी बातों का पालन किया जाता है। सरलता से समझने के लिए इन सभी को निम्नलिखित तालिका में दिया जा रहा है–

संबोधन	बड़ों को	छोटों को	मित्रों को
संबोधन	श्रद्धेय, माननीय, पूजनीय, आदरणीय, मान्यवर	प्रिय, प्रिय (नाम) (या केवल नाम)	प्रिय, मित्रवर, बंधुवर
अभिवादन	सादर प्रणाम, सादर चरण-स्पर्श	सुखी रहो, खुश रहो, आयुष्मान, आशीर्वाद	नमस्कार, नमस्ते, सप्रेम नमस्ते
समापन	आज्ञाकारी, भवदीय, शुभाकांक्षी, विनीत	शुभाकांक्षी, शुभेच्छु, शुभचिंतक, हितैषी	भवदीय, उत्तराभिलाषी, शुभचिंतक, शुभेच्छु

आप यह तो जान ही चुके हैं कि अनौपचारिक पत्र प्रायः परिवार वालों, मित्रों को या जिनसे व्यक्तिगत संबंध होता है, उन्हें लिखे जाते हैं इसीलिए ये 'पारिवारिक पत्र' भी कहे जाते हैं। इनकी भाषा सरल और आत्मीयतापूर्ण होती हैं। ये पत्र व्यक्तिगत रूप से लिखे जाते हैं।

पाने वाले का पता पत्र के बाहर यथास्थान अथवा लिफ़ाफ़े पर लिखा जाता है। यह भी पत्र का बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है। पता साफ़-साफ़ लिखा जाना चाहिए। पहले पाने वाले का नाम, उसके बाद घर की संख्या, गली, मुहल्ला और पोस्ट ऑफ़िस का नाम लिखना चाहिए। अंत में ज़िला और राज्य का नाम लिखना चाहिए। पते में पिनकोड संख्या ज़रूर लिखनी चाहिए। इससे पाने वाले को पत्र जल्दी मिल जाता है।

आपने ध्यान ज़रूर दिया होगा कि आपके घर आए सभी पत्रों में केवल एक चीज़ समान होती है, वह है आपके घर का पता। तभी तो विभिन्न स्थानों से विभिन्न समय से चले पत्र आपके घर के पते पर सही-सलामत पहुँच जाते हैं। जब आप अपना घर बदलते हैं, तो सभी को पत्र डालकर नया पता सूचित करते हैं।

पाठगत प्रश्न-20.1

नीचे दिए गए पत्र को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

हाथरस
15 अक्टूबर, 2016

पूज्य पिता जी,

सादर चरण स्पर्श।

आपका पत्र मिला, सभी हाल-चाल प्राप्त हुए। मैं दीपावली पर घर आने का कार्यक्रम बना रहा हूँ। अब तो दीपावली के कुछ ही दिन शेष हैं। एक-एक दिन गिन-गिनकर पूरे कर रहा हूँ। सभी की बहुत याद आ रही है, परंतु एक बात कहना चाहता हूँ कि आपके द्वारा भेजे हुए सभी रुपए खर्च हो चुके हैं। अभी घर आने के लिए आरक्षण भी करवाना है, अतः शीघ्र ही कुछ धनराशि भेज दीजिए।

आशा है, घर में बहन पारुल और मोहित भाई ठीक होंगे। माँ भी ठीक होंगी, मेरठ से वापस आ गई होंगी। सभी की बहुत याद आती है। घर में सभी को यथायोग्य प्रणाम।

शेष मिलने पर.....।

आपका बेटा
राहुल

चौधरी रामदास डबास
10, माजरा डबास
नई दिल्ली-110093

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. उक्त पत्र किसने किसे लिखा?

(क) राहुल ने मोहित को ☐ (ख) मोहित ने पिता जी को ☐

(ग) पिता जी ने राहुल को ☐ (घ) राहुल ने पिता जी को ☐

2. यह पत्र कहाँ से कब लिखा गया?

(क) दिल्ली से, अगस्त में ☐ (ख) हाथरस से, दिसंबर में ☐

(ग) दिल्ली से, जनवरी में ☐ (घ) हाथरस से, अक्टूबर में ☐

4. राहुल ने अपने पिता को किसलिए रुपए भेजने को लिखा–

(क) त्यौहार के लिए ☐ (ख) आरक्षण के लिए ☐

(ग) फ़ीस के लिए ☐ (घ) किराए के लिए ☐

4. आप अपने घर का डाक का पता यहाँ लिखिए :

नाम : ....

मकान संख्या (यदि हो तो) : ....

गली / मोहल्ला / गाँव : ....

शहर / ज़िला : ....

राज्य : ....

देश : ....

पिन कोड संख्या : ....

20.1.2 अंश–2

औपचारिक पत्र

पारिवारिक पत्रों के अलावा दूसरे प्रकार के पत्र होते हैं, जिन्हें 'औपचारिक पत्र' कहा जाता है। औपचारिक पत्र कार्यालयों या सरकारी कामकाज के लिए लिखे जाते हैं। घरेलू पत्रों की तरह ही इनमें भी तिथि, स्थान, भेजने वाले का पता, संबोधन, अभिवादन तथा समापन होता है, परंतु ये पत्र कम परिचित या अपरिचित व्यक्ति, पदाधिकारी आदि को लिखे जाते हैं। अतः संबोधन, अभिवादन और समापन का तरीका घरेलू पत्रों से अलग तरह का होता है। इन पत्रों को लिखने का उद्देश्य बिलकुल स्पष्ट होता है इसीलिए भाषा भी सटीक और स्पष्ट होती है। इस प्रकार के पत्र का एक नमूना देखिए–

दिनांक : 25 जनवरी, 2016

सेवा में

सचिव

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

ए-24, 25, सेक्टर-62, नोएडा

ज़िला - गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश)

पिन - 201309

विषय - अध्ययन केंद्र पर पाठ्य-सामग्री भेजने हेतु।

महोदय

मैं राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के मुक्त बेसिक शिक्षा स्तर - 'ग' पाठ्यक्रम की विद्यार्थी हूँ। हमारे अध्ययन-केंद्र पर अभी तक गणित विषय की पाठ्य-सामग्री नहीं पहुँच सकी है, जिसके कारण पढ़ाई में बाधा पैदा हो रही है।

आपसे निवेदन है कि शीघ्र ही हमारे केंद्र पर गणित विषय-संबंधी पाठ्य-सामग्री भिजवाने की व्यवस्था करें।

धन्यवाद सहित

आपकी विद्यार्थी

पूर्णिमा त्रिवेदी

पटेल लेन

जामनगर (गुजरात)

औपचारिक पत्रों की विशेषताएँ

- औपचारिक पत्रों की भाषा सटीक और स्पष्ट होती है।
- दिनांक, संबोधन और जगह का पता स्पष्ट लिखा होना चाहिए।
- संबोधन के बाद तुरंत अपनी बात पर आना चाहिए।
- समापन में धन्यवाद देते हुए अपने हस्ताक्षर करना और पता लिखना ज़रूरी है।

पाठगत प्रश्न-20.2

1. **दिए गए शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त शब्द चुनकर खाली जगह पर लिखिए :**

(i) औपचारिक पत्र .... के लिए लिखे जाते हैं।

(पारिवारिक कामकाज / कार्यालयी कामकाज)

(ii) औपचारिक पत्रों में भाषा .... होती है। (सटीक / आत्मीय)

(iii) औपचारिक पत्रों में पत्र लिखने का उद्देश्य .... होता है। (स्पष्ट / सरल)

(iv) आपके घर के पास का पार्क बहुत गंदा है, नगर पालिका अधिकारी को पत्र लिखते समय आप क्या संबोधन लिखेंगे?

....

20.2 आपने क्या सीखा

- दूर बैठे व्यक्ति को हम पत्रों द्वारा अपने मन के विचार पहुँचा सकते हैं।
- पत्र दो प्रकार के होते हैं– अनौपचारिक और औपचारिक।
- अनौपचारिक पत्र अपने परिवारवालों और दोस्तों को किसी घरेलू कामकाज के लिए लिखे जाते हैं, जैसे– परिवार में किसी के हाल-चाल जानने के लिए, सुरक्षित पहुँच की खबर देने या लेने के लिए आदि।
- अनौपचारिक पत्रों की भाषा सीधी-सरल और बोल-चाल की, अपनापन लिए हुए होती है।
- औपचारिक पत्र कार्यालयों में किसी विशेष कामकाज के संबंध में लिखे जाते हैं। इनकी भाषा सटीक, स्पष्ट और सीधे काम से जुड़ी हुई होती है।
- पत्रों में दिनांक, स्थान, संबोधन, अभिवादन और समापन का विशेष महत्त्व होता है।
- पत्र जहाँ, जिसे भेजा जा रहा है, उसका साफ़-साफ़ पता तथा पिनकोड लिखना बहुत ज़रूरी है, जिससे पत्र सही स्थान पर जल्दी पहुँचे।
- पत्र भेजते समय, भेजने वाले का पता लिखा जाना बहुत ज़रूरी है। इसका फ़ायदा यह होता है कि यदि पत्र सही स्थान पर किसी कारण न पहुँच पाए तो भेजने वाले के पास वापस आ जाए।

20.3 योग्यता-विस्तार

- विभिन्न औपचारिक और अनौपचारिक पत्रों को इकट्ठा कीजिए। उनका अध्ययन कीजिए। उनमें अंतर समझने की कोशिश कीजिए।
- अपने आस-पास के डाकघरों से कुछ स्थानों के पिनकोड नंबर इकट्ठा कीजिए।
- पत्र फैक्स मशीन द्वारा भी भेजे जाते हैं। इसमें टेलीफ़ोन का नंबर ही फ़ैक्स नंबर होता है, जिससे फ़ैक्स मशीन द्वारा पत्र अथवा लिखित सामग्री एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जा सकती है।
- अब इलैक्ट्रॉनिक मेल द्वारा भी पत्र भेजे जाते हैं। ये पत्र इंटरनेट द्वारा भेजे जाते हैं। ये पत्र वर्ड वाइड वेब (www) के माध्यम से भेजते ही तत्काल पहुँच जाते हैं। इससे समय की बचत होती है मगर यहाँ भेजने और प्राप्त करने वाले का पता विशेष प्रकार का होता है।
- अपने किसी मित्र को पत्र भेजकर अपनी कुशलता बताइए और उसकी कुशल-क्षेम पूछिए।

20.4 पाठांत प्रश्न

1. पत्र क्यों लिखे जाते हैं?

   ....

2. पत्र में यदि हम अपना स्थान और पता न लिखें, तो क्या होगा?

   ....

3. अनौपचारिक पत्र की भाषा कैसी होती है?

   ....

4. औपचारिक पत्र की क्या विशेषताएँ होती हैं?

   ....

   ....

5. निम्नलिखित पत्र को पूरा कीजिए-

दिनांक ....

स्थान ....

आदरणीय माताजी

मैं यहाँ सकुशल हूँ। आशा है, आप भी ....

....

....

....

....

....

....

....

....

आपकी बेटी / बेटा

....

6. आपके इलाके में दो दिन से बिजली न आने की सूचना देते हुए उसे ठीक कराने के लिए अपने निकट के विद्युत कार्यालय के अधिकारी को एक पत्र लिखिए–

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न-20.1

1. (घ) राहुल ने पिताजी को।
2. (घ) हाथरस से अक्टूबर में।
3. (घ) आरक्षण के लिए
4. स्वयं कीजिए।

पाठगत प्रश्न-20.2

1. (i) कार्यालयी कामकाज

   (ii) सटीक

   (iii) स्पष्ट

   (iv) स्वयं लिखें

❀ ❀ ❀

मूल्यांकन पत्र-3
(पाठ 15 से 20 तक)

1. पाठों के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) मेहनत से कमाया एक भी पैसा किससे अधिक मूल्यवान होता है?

....

(ii) रामू की बहू किससे नफ़रत करती थी?

....

(iii) संतुलित और पौष्टिक आहार क्या है?

....

(iv) पत्र में बड़ों के लिए क्या संबोधन लिखे जाते हैं?

....

(v) मेजर ध्यानचंद के पिता क्या करते थे?

....

2. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) रोशनी पाने के लिए क्या जलाना पड़ता है?

(क) पत्ती ☐ (ख) बत्ती ☐

(ग) घर ☐ (घ) दिल ☐

(ii) रामू की बहू ने कबरी बिल्ली पर क्या दे मारा?

(क) लोहे का हथौड़ा ☐ (ख) नीम का डंडा ☐

(ग) लकड़ी का पाटा ☐ (घ) हाथ का चाँटा ☐

(iii) चोकरवाले आटे की रोटियाँ कैसी होती हैं?

(क) पौष्टिक ☐ (ख) खट्टी ☐

(ग) चटपटी ☐ (घ) मीठी ☐

(iv) ध्यानचंद का निधन कैसे हुआ?

(क) हार्ट अटैक से ☐ (ख) ब्लड प्रेशर से ☐

(ग) मधुमेह से ☐ (घ) लिवर कैंसर से ☐

3. दोनों तरफ़ के शब्दों को मिलाकर सही जोड़े बनाइए :

हॉकी का	बिल्ली
औपचारिक	व्यायाम
पौष्टिक	लिंकन
कबरी	पत्र
अब्राहम	जादूगर
योग	आहार

4. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय छाँटकर अलग-अलग लिखिए :

अधर्म	अपयश	स्वच्छता	धार्मिक	बदनाम
राष्ट्रीय	बामुलाहिजा	उनसठ	मानवता	रसोइया

उपसर्ग – ....

प्रत्यय – ....

5. निम्नलिखित वाक्यांशों की जगह एक शब्द लिखिए :

(i) झूठ बोलने वाला ....

(ii) मदद करने वाला ....

(iii) जिस लड़के की शादी न हुई हो ....

(iv) यात्रा करने वाला ....

(v) सेवा करने वाला ....

(vi) जिसके अंदर बहुत फुर्ती हो ....

6. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखिए :

(i) आग बबूला होना ....

(ii) चिकना घड़ा होना ....

(iii) नौ दो ग्यारह होना ....

(iv) पौ बारह होना ....

(v) मन में लड्डू फूटना ....

(vi) आँखों का तारा होना ....

7. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

जैविक कृषि टिकाऊ खेती है। इससे मिट्टी की सेहत अच्छी होती है। जैविक कृषि में हरी खाद, गोबर की खाद, केंचुआ खाद, मटका खाद आदि का प्रयोग किया जाता है। फसल की सुरक्षा के लिए जैविक कीटनाशी का छिड़काव किया जाता है। ये कीटनाशी गोमूत्र, नीम की खली, नीम के तेल और नीम की पत्तियों से तैयार किए जाते हैं।

(i) मिट्टी की सेहत किससे ठीक होती है?

....

(ii) जैविक कृषि में किन खादों का प्रयोग किया जाता है?

....

(iii) जैविक कीटनाशी किससे तैयार किए जाते हैं?

....

उत्तरमाला

1. (i) मुफ़्त में मिली नोटों की गड्डी से।

   (ii) कबरी बिल्ली से।

   (iii) वह आहार, जिससे शरीर को सभी आवश्यक तत्त्व सही मात्रा में मिलें।

(iv) श्रद्धेय, माननीय, पूजनीय, आदरणीय, मान्यवर आदि।

(v) सेना में सूबेदार थे।

2. (i) (ख) बत्ती — (ii) (ग) लकड़ी का पाटा

(iii) (क) पौष्टिक — (iv) (घ) लीवर कैंसर से

3. हॉकी का जादूगर

औपचारिक पत्र

पौष्टिक आहार

कबरी बिल्ली

अब्राहम लिंकन

योग व्यायाम

4. उपसर्ग – अ अप बद बा उन

प्रत्यय – ता इक ईय ता इया

5. (i) झूठा (ii) मददगार (iii) कुँवारा

(iv) यात्री (v) सेवक (vi) फुर्तीला

6. (i) बहुत गुस्सा होना (ii) बेशर्म होना

(iii) भाग जाना (iv) खूब लाभ होना

(v) मन ही मन खुश होना (vi) प्रिय होना

7. (i) जैविक कृषि से।

(ii) हरी खाद, गोबर की खाद, केंचुआ खाद, मटका खाद आदि।

(iii) गोमूत्र, नीम की खली, नीम के तेल और नीम की पत्तियों से।

❀ ❀ ❀

मुक्त बेसिक शिक्षा-पाठ्यक्रम
विषय : हिंदी
स्तर-'ग'

1. औचित्य

स्वयं को, समाज को और पूरी दुनिया को जानने और दूसरों से संवादात्मक रिश्ता कायम करने के लिए भाषा एक औज़ार है। भाषा दुनियावी चुनौतियों का सामना करने की क्षमता और आत्मविश्वास बढ़ोत्तरी करती है। हम भाषा में बोलते हैं, लिखते हैं, पढ़ते हैं और भाषा में ही सोचते हैं। भाषा के बिना मनुष्य का अस्तित्व संभव नहीं है।

औपचारिक शिक्षा शुरू करने से पहले भी शिक्षार्थी के पास परिवेश से सीखी अपनी भाषा होती है। पाठ्य-सामग्री से नज़दीकी परिवेश और बाहरी दुनिया का संबंध स्थापित करते हुए वे अपनी भाषा का विस्तार करते हैं। बोली हुई और लिखित भाषा में अंतर होता है, इनमें एक संबंध स्थापित करने का प्रयास प्रत्येक शिक्षार्थी का लक्ष्य होता है। यह रचनात्मक प्रयास उसकी अपनी भाषा को सृजनात्मक आयाम देने में समर्थ होता है।

भाषा-शिक्षण के इस महत्त्व को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय ने शिक्षार्थियों के लिए स्तर 'ग' ('सी') का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया है। इसमें शिक्षार्थी को सुनना और बोलना कौशल का अभ्यास कराने के साथ-साथ उसके पढ़ने और लिखने के कौशल का विकास भी किया जाएगा।

लक्ष्य

इस पाठ्यक्रम में पूर्ण योग्यता प्राप्त करने के बाद शिक्षार्थी राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान से माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर की शिक्षा को जोड़ने वाली कड़ी है, किंतु इसका स्वतंत्र रूप से भी अध्ययन किया जा सकता है।

2. पूर्व अपेक्षाएँ

इस स्तर के पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के लिए शिक्षार्थी को निम्नलिखित पूर्वज्ञान होना आवश्यक है–

स्तर 'बी' के स्तर की भाषा संबंधी योग्यता अर्थात्–

- सामान्य बातचीत, रेडियो कार्यक्रमों तथा विभिन्न उद्घोषणाओं को सुनने और समझने की सामान्य योग्यता;
- सामान्य गति से अपनी बात को मौखिक एवं लिखित रूप से प्रस्तुत करने की योग्यता;
- सरल काव्य-पठन तथा गद्य-पठन की योग्यता;

- पठित सामग्री के भावों और विचारों को अपनी भाषा में लिखने की योग्यता;
- भाषा के सामान्य और उपयोगी शब्द-भंडार का ज्ञान;
- कल्पनाशील और सृजनात्मकता का गुण।

3. उद्देश्य

पाठ्यक्रम के सामान्य व विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं–

3.1 सामान्य उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम के सामान्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- दैनिक जीवन में व्यावहारिक भाषा का बेहतर ढंग से प्रयोग करने की योग्यता का विकास करना;
- दैनिक जीवन में प्रयोग में आने वाले व्यावहारिक-व्यावसायिक एवं प्रयोजनमूलक क्षेत्रों में प्रयुक्त शब्द-भंडार में वृद्धि करना;
- सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने संबंधी कौशलों का विकास करना;
- समाचार पत्र, पत्रिकाएँ तथा अन्य पुस्तकें पढ़ने के प्रति रुझान पैदा करना;
- किसी निश्चित उद्देश्य को लेकर पठन की योग्यता का विकास करना;
- मनोरंजन और आनंद के लिए पढ़ने में रुचि जगाना;
- स्वाध्याय के लिए प्रेरित करना;
- सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करना;
- प्रकृति प्रेम, जीवन कौशल, राष्ट्र प्रेम तथा मानव-मूल्यों का विकास।

3.2 विशिष्ट उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद शिक्षार्थी–

3.2.1 सुनना, बोलना, लिखना

1. निजी अनुभवों के आधार पर सृजनशील भाषा का प्रयोग कर सकेंगे;
2. परिचित परिवेश तथा विषयों से संबंधित निर्देश, वार्तालाप को सुनकर उन्हें समझ सकेंगे और उन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकेंगे;
3. वार्तालाप, कहानी, भाषण, चर्चा-परिचर्चा आदि के केंद्रीय बिन्दुओं को समझकर उन पर मौखिक एवं लिखित रूप से अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे;
4. दृश्य एवं श्रव्य माध्यमों की सामग्री (पत्र-पत्रिकाएँ, बाल-सहित्य, दूरदर्शन, कंप्यूटर, जनहित कार्यक्रम नाटक, सिनेमा, भाषण, परिचर्चा आदि) को देखकर, सुनकर और पढ़कर उस पर अपने स्वतंत्र व सहज विचार मौखिक और लिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकेंगे;

5. लिखते समय विचारों और घटनाओं के क्रम को ध्यान में रखकर लिख सकेंगे;
6. देखी, सुनी, पढ़ी विषय-वस्तु तथा पाठ्य-सामग्री में घटित घटनाओं के बीच तार्किक संबंध स्थापित कर सकेंगे;
7. लिखित-वर्णित घटना, मेला, खेल आदि का लिखित वर्णन कर सकेंगे;
8. भाषा के सौन्दर्य की सराहना कर सकेंगे;
9. औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्र लिखने की योग्यता का विकास कर सकेंगे;
10. पढ़े हुए समाचारों के आधार पर अपनी प्रतिक्रियास्वरूप संपादक को पत्र लिख सकेंगे। एक ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में सामाजिक मुद्दों, समस्याओं के निवारण संबंधी अपने विचार पत्र-पत्रिकाओं में लिखने का प्रयास कर सकेंगे;
11. आपसी विचार-विनिमय से निर्णय लेने की क्षमता का विकास कर सकेंगे।

3.2.2 व्याकरण तथा भाषा-प्रयोग

1. व्याकरण के सामान्य नियमों का उचित अनुप्रयोग करने की योग्यता का विकास करना;
2. स्वर-संधि और समास का ज्ञान कराना;
3. मूल शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर शब्द-निर्माण करने की योग्यता का विकास करना;
4. विभिन्न विषय-क्षेत्रों से संबंधित शब्दावली, मुहावरों, लोकोक्तियों और कहावतों का सार्थक प्रयोग करना;
5. मानक वर्तनी का प्रयोग करने की योग्यता का विकास करना;
6. अव्यय का ज्ञान कराना;
7. अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं का ज्ञान कराना;
8. वाक्य के प्रकार, वाक्य परिवर्तन की क्षमता का विकास करना;
9. अनेकार्थी शब्द और अनेक शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग करना सिखाना।

4. पाठ्यक्रम का परिचय

शिक्षार्थियों में सुनना, बोलना-पढ़ना और लिखना कौशल का विकास करने के लिए विविध सामग्री प्रदान की जाएगी।

पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में भाषा-शिक्षण के चारों कौशलों को संयुक्त रूप में देखा जाना चाहिए, किन्तु मूल्यांकन की सुविधा के लिए इनके अलग-अलग लक्ष्य गिनाए गए हैं।

5. पाठ्यक्रम का विवरण

पाठ्यक्रम को 180 घंटों में पूरा किया जाएगा। प्रत्येक कौशल के लिए निम्नानुसार समय का निर्धारण किया गया है-

5.1 सुनना और बोलना

लक्ष्य **समय : 18 घंटे**

इस इकाई का लक्ष्य शिक्षार्थियों में भाषा सुनने और बोलने के कौशल को विकसित करने से संबंधित विशेष जानकारी देना है, जिससे वे दैनिक जीवन में बेहतर तरीके से दूसरों की बातों को समझकर सबके और अपने मन की बातें दूसरों तक पहुँचा सकेंगे।

5.2 पढ़ना

लक्ष्य **समय : 76 घंटे**

शिक्षार्थियों में पठन-कौशल का विकास करने के उद्देश्य से काव्य तथा गद्य से संबंधित विविध प्रकार की सामग्री प्रदान की जा रही है। इसमें कुछ कविताएँ, लेख तथा कहानियाँ हैं। यह सामग्री व्यावहारिक ज्ञान-वृद्धि के लिए दी जा रही है।

पढ़ना कौशल की संप्राप्ति के लिए कुछ सामग्री चुनकर पठन-सामग्री के रूप में शिक्षार्थियों को उपलब्ध कराई जाएगी। यह अपेक्षा की जाती है कि यह सामग्री एक ओर तो भाषिक कुशलताओं में दक्षता प्राप्ति में सहायक होगी और दूसरी ओर हिंदी साहित्य की कुछ विधाओं की सामान्य जानकारी और पढ़ने के प्रति रुझान पैदा करने में सहायक होगी। प्रस्तावित पाठ्यक्रम में प्रस्तुत की जाने वाली पठन-सामग्री की रूपरेखा इस प्रकार है–

कविताएँ – लगभग पाँच कविताएँ, जिनमें कुछ रचनाएँ मध्ययुगीन कवियों को होगी और शेष खड़ी बोली हिंदी की।

गद्य – गद्य खण्ड में रोचक कहानियाँ, लेख, जीवनी, संस्मरण, संवाद, निबंध, यात्रा-विवरण आदि होंगे। पाठों की विषय-वस्तु आम जीवन से संबंधित होगी और उनमें परोक्षरूप से प्रौढ़-शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के प्रमुख बिंदुओं का ध्यान रखा जाएगा।

5.3 लिखना

समय : 50 घंटे

लिखना भाषा का महत्त्वपूर्ण पक्ष है। जो बात हम कह नहीं सकते या कहना नहीं चाहते, उसे लिख कर दूसरे व्यक्ति तक पहुँचा सकते हैं। इस कौशल का विकास करने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यक्रम में लेखन-संबंधी सामान्य व्यावहारिक ज्ञान; जैसे– लेखन के सामान्य नियम,

अनुच्छेद-लेखन और भाव-पल्लवन तथा प्रमुख प्रकार के पत्र और निबंध रखे गए हैं, जो इस प्रकार हैं–

अनुच्छेद-लेखन

कथा-पल्लवन

भाव-पल्लवन

निबंध-लेखन

पत्र-लेखन

औपचारिक पत्र – प्रार्थना-पत्र, शिकायती तथा सुझाव पत्र।

अनौपचारिक पत्र – घरेलू पत्र (माता-पिता, भाई-बहन, मित्र आदि को लिखे जाने वाले पत्र), लघु आयोजन के लिए निमंत्रण-पत्र आदि।

5.4 व्याकरण तथा भाषा-प्रयोग

समय : 6 घंटे

लक्ष्य

व्यावहारिक व्याकरण तथा भाषा प्रयोग-भाषा का अभिन्न अंग है। सरलता और व्यावहारिक प्रयोग को ध्यान में रखते हुए यहाँ हिंदी-व्याकरण के प्रमुख बिंदुओं को गद्य के पाठों में समाहित किया गया है और संदर्भ आने पर बिंदुओं को समझाया गया है। इसके निर्धारित बिंदु इस प्रकार हैं–

वर्तनी और उच्चारण

शब्द पढ़ना – पर्यायवाची, विलोम, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, अनेकार्थी शब्द;

शब्द-निर्माण – संधि, समास, उपसर्ग तथा प्रत्यय का सामान्य परिचय;

पदबंध – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय की पहचान;

वाक्य-संरचना – संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्य तथा विराम-चिह्न आदि का प्रयोग;

मुहावरों, लोकाक्तियों और कहावतों का पाठों के आधार पर व्यावहारिक रूप में अभ्यास कराया जाएगा।

6. अध्ययन-योजना

यह पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से दिया जाएगा। पाठ्यक्रम मूलतः स्वाध्याय पर आधारित है। इस बात को ध्यान में रखते हुए शिक्षार्थी के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर सामग्री तैयार की गई है। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के प्रश्न दिए गए हैं, ताकि शिक्षार्थी की धारण-क्षमता विकसित हो सके और इसके साथ ही लिखने व विचार करने की क्षमता भी बढ़े।

शिक्षार्थियों के लिए अध्ययन-केन्द्रों पर सम्पर्क-कक्षाओं का भी प्रावधान है। इन सम्पर्क-कक्षाओं में शिक्षार्थी अपनी विषय संबंधी समस्याओं का समाधान पा सकेंगे। साथ ही, वहाँ पर अन्य शिक्षार्थियों से भी इन समस्याओं पर चर्चा कर सकेंगे। शिक्षार्थी साक्षरता-केन्द्रों / प्रौढ़ शिक्षा-केन्द्रों पर भी अपनी विषय-संबंधी समस्याओं का समाधान पा सकेंगे।

7. मूल्यांकन-योजना

7.1 स्व-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी अपना मूल्यांकन करते रहेंगे। इसके लिए हर पाँच पाठ के बाद एक जाँच-पत्र दिया गया है। जाँच-पत्र में उन्हीं पाँच पाठों से संबंधित प्रश्न पूछे गए हैं। शिक्षार्थी को इन प्रश्नों के उत्तर देने हैं। पुस्तक के अंत में इन जाँच पत्रों के सही उत्तर दिए गए हैं। शिक्षार्थी अपने उत्तरों का सही उत्तरों से मिलान करके अपना मूल्यांकन करते रहेंगे। इस तरह पाठ्यक्रम में स्व-मूल्यांकन की पद्धति अपनाई गई है।

7.2 बाह्य मूल्यांकन

पाठ्यक्रम पूरा करने के उपरांत शिक्षार्थी का बाह्य मूल्यांकन होगा। इसके लिए कुल 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रश्नपत्र तीन घंटे का होगा। इसमें पाठ आधारित प्रश्न होंगे। बोध पर आधारित प्रश्न भी होंगे। साथ ही, सामान्य समझ पर आधारित प्रश्न भी होंगे। प्रश्न वस्तुनिष्ठ, अति लघूत्तरीय, लघूत्तरीय और दीर्घ उत्तरीय होंगे।

❀ ❀ ❀

नमूना प्रश्नपत्र
हिंदी - स्तर 'सी'

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 1 x 10 = 10

(i) प्रताप से मिलने के बाद मोहन ने निर्णय लिया कि वह–

(क) नौकरी करेगा ☐ (ख) मज़दूरी करेगा ☐

(ग) व्यापार करेगा ☐ (घ) खेती-बाड़ी करेगा ☐

(ii) जापानी नागरिक स्वामी राम तीर्थ के लिए ताज़े फल लाया, क्योंकि उससे सहन नहीं हुई–

(क) देश की निंदा ☐ (ख) देश में कमी ☐

(ग) देश की प्रशंसा ☐ (घ) देश की वास्तविकता ☐

(iii) 'मूर्ख कौन' कहानी में अंत में मूर्ख कौन सिद्ध हुआ?

(क) राज मूर्ख ☐ (ख) राजा ☐

(ग) जनता ☐ (घ) दरबारी ☐

(iv) पुरी का जगन्नाथ मंदिर बना था–

(क) 795 ईसवी में ☐ (ख) 527 ईसवी में ☐

(ग) 899 ईसवी में ☐ (घ) 790 ईसवी में ☐

(v) अशफ़ाक ने फ़ाँसी को किसकी मर्ज़ी माना?

(क) अंग्रेज़ों की ☐ (ख) न्याय-प्रक्रिया की ☐

(ग) खुदा की ☐ (घ) जनता की ☐

(vi) हरद्वार का कुंभ मेला किस नदी के किनारे लगता है?

(क) नर्मदा ☐ (ख) क्षिप्रा ☐

(ग) गंगा ☐ (घ) यमुना ☐

(vii) व्याकरण के अनुसार 'कानपुर' है–

(क) सर्वनाम ☐ (ख) विशेषण ☐

(ग) संज्ञा ☐ (घ) क्रिया ☐

(viii) 'कंजूस' शब्द है–

(क) क्रिया	☐	(ख) विशेषण	☐
(ग) संज्ञा	☐	(घ) सर्वनाम	☐

(ix) 'न्याय' का विलोम है–

(क) फ़ैसला	☐	(ख) जज़	☐
(ग) हक	☐	(घ) अन्याय	☐

(x) 'अनुभव' शब्द में उपसर्ग है–

(क) अ	☐	(ख) अन	☐
(ग) अनु	☐	(घ) अन्	☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर 20-20 शब्दों में लिखिए : 2 x 4 = 8

(i) 'प्रायश्चित' कहानी में सोने की बिल्ली बनवाने का निर्णय क्या सिद्ध करता है?

(ii) ध्यानचंद ओलंपिक में नंगे पैर क्यों खेले थे?

(iii) 'बूढ़े की गवाही' कहानी में लड़का जेल से क्यों भागा था?

(iv) अब्राहम लिंकन ने बेटे को समझाने के लिए शिक्षक को पत्र क्यों लिखा?

(v) विश्वेश्वरैया के नियम पालन का उदाहरण लिखिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर 20-20 शब्दों में लिखिए : 2 x 4 = 8

1. तुलसी के सवैये में सीता के माथे पर पसीने की बूँदें क्यों झलकने लगीं?
2. रविदास ने स्वयं को पानी और प्रभु को चंदन क्यों कहा है?
3. कबीर ने 'खोजी' शब्द का प्रयोग किसके लिए और क्यों किया है?
4. 'नर हो न निराश करो मन को' में 'स्वत्व सुधा' से क्या आशय है?
5. 'काँटों में राह बनाते हैं' कविता में प्रयुक्त 'पर्वत' और 'नर' शब्द के दो-दो पर्याय लिखिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर कोष्ठक में दिए गए निर्देशानुसार दीजिए : 1 x 4 = 4

(i) हरनाम कौर आज दिल्ली जाएगी। (निषेधवाचक वाक्य में बदलिए)

(ii) नाक में दम होना। (वाक्य में प्रयोग कीजिए)

(iii) सूर्य + उदय (संधि करिए)

(iv) एक फूल की माला लाओ। (शुद्ध कीजिए)

5. निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 4 x 2 = 8

(क) है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके आदमी के मग में
खम ठोंक ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पाँव उखड़
मानव जब ज़ोर लगाता है।
पत्थर पानी बन जाता है।

(i) किसके मार्ग में कोई विघ्न नहीं टिक सकता? 1

(ii) 'पर्वत के पाँव उखड़ने' का क्या अर्थ है? पर्वत के पाँव कब उखड़ते हैं? 1+1

(iii) 'पत्थर के पानी बन जाने' से क्या आशय है? 1

(ख) पुरतें निकसीं रघुबीर बधू, धरि-धीर दए मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनीं जलकी, पुट सूखि गए मधुराधर वै।।
फिरि बूझिति हैं, चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौं कित ह्वै।
तिय की लखि आतुरता पिय की अँखियाँ, अतिचारु चली जल्च्वै।।

(i) कविता में में 'रघुबीर वधू' किसे कहा गया है? 1

(ii) 'पर्नकुटी' बनाने की बात क्यों कही गई है? 1

(iii) पिय की आँखों से आँसू क्यों निकलने लगे? 2

6. निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 4 x 2 = 8

(क) हमारी हीनता और श्रेष्ठता का संबंध देश की हीनता और श्रेष्ठता से जुड़ा हुआ है। जब हम कोई हीन या बुरा काम करते हैं तो हमारे माथे पर ही कलंक का टीका नहीं लगता, बल्कि देश का सिर भी नीचा होता है, उसकी प्रतिष्ठा गिरती है। इसलिए हमें कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे देश की प्रतिष्ठा पर आँच आए।

(i) हमारी हीनता और श्रेष्ठता की बात किससे जुड़ी है? 1

(ii) देश का सिर क्यों नीचा हो जाता है? 1

(iii) देश की प्रतिष्ठा पर आँच न आए इसके लिए हमें क्या करना चाहिए। 1

(iv) कलंक का टीका लगना का आशय स्पष्ट कीजिए। 1

(ख) मैंने खेती और बागवानी को आजीविका का आधार बनाया। फलदार वृक्ष लगाए। ब्लॉक से ऋण लेकर दो उत्तम नस्ल की गाएँ खरीदीं। यहाँ मैं गाय का ताज़ा दूध पीता हूँ। गाँव के शुद्ध

वातावरण में स्वस्थ रहता हूँ। माता-पिता की सेवा करता हूँ। बचा हुआ अन्न, फल, सब्ज़ियाँ तथा दूध बाज़ार में बेचकर तीस-चालीस हज़ार रुपये सालाना कमा भी लेता हूँ। ज़िंदगी की चकाचौंध में इंसान इन सबसे दूर सिर्फ़ एक दिखावटी और मशीनी ज़िंदगी ही तो जी रहा है। यह सब विचार कर मैंने अपने गाँव में ही मेहनत और सम्मान की ज़िंदगी जीने का निर्णय लिया।

(i) गद्यांश में आजीविका का आधार किसे और क्यों बनाने को कहा गया है? 1+1

(ii) जिंदगी की चकाचौंध में इंसान किन चीज़ों से दूर हो गया है? 1

(iii) गाँव में ही सम्मान की ज़िंदगी जीने का निर्णय हमें क्या संदेश देता है? 1

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 25-25 शब्दों में लिखिए :

2 x 2 = 4

(i) संत रविदास ने ईश्वर और भक्त के संबंधों के लिए कौन-कौन से उदाहरण दिए हैं? किन्हीं चार का उल्लेख कीजिए। ½ x 4 = 2

(ii) 'रसखान' द्वारा वर्णित श्रीकृष्ण का सौंदर्य अपने शब्दों में लिखिए। 2

(iii) रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी कविता में किसे सूरमा माना है और किसे कायर? लिखिए। 1+1

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर 20-20 शब्दों में लिखिए : 2 x 2 = 4

(i) 'मूर्ख कौन' पाठ में सैनिकों ने मूर्ख की पहचान कैसे की? 2

(ii) 'हॉकी का जादूगर' पाठ के आधार पर ध्यानचंद से जुड़ी किन्हीं दो बातों का उल्लेख कीजिए। 1+1 = 2

(iii) 'अब्राहम लिंकन का पत्र' पाठ से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? 2

9. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों को कोष्ठक में दिए गए शब्दों के अनुसार पहचान कर लिखिए : 1 x 4 = 4

(i) अकबर <u>धीरे-धीरे</u> चल रहा है। (क्रिया, क्रिया विशेषण)

(ii) कुषाण <u>के साथ</u> मार्था भी जा रही है। (योजक, संबंधबोधक)

(iii) तेजीन्दर <u>और</u> नसीमा एक ही कक्षा में पढ़ती हैं। (संबंधबोधक, योजक)

(iv) <u>शाबाश!</u> इसी तरह मेहनत करते रहो। (समुच्चयबोधक / विस्मयादिबोधक)

10. **पाठों के आधार पर निम्नलिखित कथनों को कहने वालों के नाम लिखिए :** **1 x 4 = 4**

(i) "जब चोट लगेगी, तब पता चलेगा।" ....

(ii) "बिल्ली कितने तोले की बनेगी।" ....

(iii) "मगर मादरे वतन 'भारत माता' अपना दूध ज़रूर बख्श देगी।" ....

(iv) "मैं एक इंजीनियर हूँ।" ....

11. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

1 x 4 = 4

नशा करना शरीर पर कई दुष्प्रभाव छोड़ता है। इससे शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता कमज़ोर हो जाती है। नशा करने वालों में तपेदिक और अन्य संक्रामक रोग अधिक पाए जाते हैं। बीड़ी-सिगरेट और चिलम पीने वालों के फेफड़े रोगी हो जाते हैं। इंजेक्शन द्वारा नशीली दवा लेने वालों में पीलिया और एड्स का खतरा अधिक होता है।

(i) नशे से क्या कमज़ोर हो जाता है?

....

(ii) नशा करने वालों में कौन-से रोग अधिक पाए जाते हैं?

....

(iii) किसके फेफड़े रोगी हो जाते हैं?

....

(iv) इंजेक्शन से नशीली दवा लेने वालों में किसका खतरा अधिक होता है?

....

12. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

1 x 4 = 4

जग में सुख की प्राप्ति के लिए एक सहायक दुख है,
वही जगाता है सद्गुण को, सद्गुण लाता सुख है।
बाधा, विघ्न, विपत्ति, कठिनता, जहाँ-जहाँ सुन पाना,
सबके बीच निडर हो जाना, दुख को गले लगाना।

(i) दुख किसके लिए सहायक है?

....

(ii) सद्‌गुण की उपलब्धि क्या है?

....

(iii) कवि किसके बीच निडर होकर जाने के लिए कहता है?

....

(iv) कविता में दुख को गले लगाने के लिए क्यों कहा गया है?

....

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 30-40 शब्दों में लिखिए : 2 x 3 = 6

(i) गुरु नानक देव ने लोगों के सामने कौन-कौन से जीवन-मूल्य स्थापित किए? किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए? 3 x 1 = 3

(ii) 'स्वस्थ जीवन' पाठ हमें किस प्रकार का जीवन जीने की प्रेरणा देता है? आप अपने जीवन में उनका किस तरह पालन करते हैं, लिखिए। 1 + 2 = 3

(iii) शहीद अशफ़ाक उल्ला खाँ का जीवन हमें एकता बनाए रखने की प्रेरणा किस प्रकार देता है? आज के समय में अशफ़ाक उल्ला का उदाहरण क्यों महत्त्वपूर्ण है? 1 + 2 = 3

14. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर 30-40 शब्दों में लिखिए– 2 x 3 = 6

(i) 'काँटों में राह बनाता चल' कविता पढ़कर आप अपने जीवन में क्या परिवर्तन अनुभव करते हैं? आप अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कविता से कैसे सहायता लेंगे? 1 + 2 = 3

(ii) 'कबीर का पद' आज किस प्रकार समाज में एकता व सादगी बनाए रखने में कामयाब होगा? 3

(iii) 'नर हो न निराश करो मन को' कविता समाज में सकारात्मक सोच लाने में किस प्रकार सहायक है? 3

15. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 150 शब्दों में निबंध लिखिए : 6

- मेरा प्रिय त्योहार
- मेले का आनंद

- जल ही जीवन है
- समय का मोल
- स्वास्थ्य और योग

16. अपनी बहन के विवाह में अपने किसी संबंधी को आमंत्रित करते हुए पत्र लिखिए। 6

अथवा

अपने क्षेत्र में बढ़ती हुई छेड़खानी, चोरी, लूटपाट आदि की घटनाओं का हवाला देते हुए कानून और व्यवस्था की बहाली के लिए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।

17. निम्नलिखित संकेतों के आधार पर कहानी बनाइए : 6

बंदर, मगरमच्छ, पेड़, नदी, जामुन, दिल

अथवा

निम्नलिखित चित्र को आधार बनाकर एक कहानी लिखिए।

अंक योजना

1. (i) (घ) (ii) (क) (iii) (ख)
(iv) (क) (v) (ग) (vi) (ग)
(vii) (ग) (viii) (ख) (ix) (घ)
(x) (ग) 1 x 10 = 10

2. (i) अंधविश्वास की प्रवृत्ति और धार्मिक पाखंड। 1
(ii) ताकि शीघ्रता से गोल कर सकें और भारत जीत जाए। 1
(iii) वह घरवालों से अलग रहकर बहुत परेशान था। 1
(iv) क्योंकि शिक्षक की बात का असर बच्चों पर ज़्यादा होता है। 1
(v) राष्ट्रपति भवन में तीन दिन अतिथि के ठहरने का नियम है, अतः तीन दिन के बाद वे बाहर ठहरना चाहते थे। 1

3. (i) सीता रघुकुल की पुत्रवधू व राजघराने में पली बढ़ी थी। वन मार्ग पर चलने से थक गई। 1
(ii) क्योंकि जैसे पानी में मिलकर चंदन की खुशबू चारों ओर फैल जाती है, वैसे ही भक्त का व्यक्तित्व भी ईश्वर से मिलकर प्रभावी हो जाता है। 1
(iii) भक्त के लिए किया, क्योंकि उसमें ही ईश्वर से मिलने की चाह होती है। 1
(iv) 'स्वत्व सुधारस' का तात्पर्य आत्मविश्वास व साहस से है। 2
(v) (i) गिरि, पहाड़, भूधर, अचल आदि ½+½
(ii) आदमी, मनुज, मानव, मानुष आदि ½+½

4. (i) हरनाम कौर आज दिल्ली नहीं जाएगी 1
(ii) उचित वाक्य-प्रयोग पर पूर्ण अंक दिया जाए 1
(iii) सूर्योदय 1
(iv) फूल की एक माला लाओ 1

5. (क) (i) आदमी के मार्ग में कोई विघ्न नहीं टिक सकता है। 1
(ii) पर्वत के पाँव उखड़ने का अर्थ है– कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेना। जब मानव साहस के साथ पर्वत जैसी कठिनाईयों से भिड़ जाता है। 1+1
(iii) पत्थर के पानी बन जाने का तात्पर्य है कठिन से कठिन परिस्थितियों का सरल हो जाना। 1

(ख) (i) कविता में रघुबीर वधू शब्द सीता के लिए कहा गया है। 1

(ii) पर्णकुटी बनाने की बात विश्राम करने के लिए कही गई है। 1

(iii) पिय की आँखों से आँसू सीता का कष्ट देखकर निकलने लगे। 1

6. (क) (i) हमारी हीनता और श्रेष्ठता की बात देश की हीनता और श्रेष्ठता से जुड़ी होने से की गई है। 1

(ii) देश का सिर हमारे हीन या बुरा काम करने से नीचा हो जाता है। 1

(iii) देश की प्रतिष्ठा पर आँच न आए इसके लिए हमें कोई हीन या बुरा काम नहीं करना चाहिए। 1

(iv) कोई बुरा काम करने से बदनाम होना। 1

(ख) (i) गद्यांश में आजीविका का आधार खेती और बागवानी को बनाने को कहा गया है क्योंकि इससे शहरों की समस्याओं से बचकर गाँवों के शुद्ध वातावरण में ही आजीविका मिल जाती है। 1+1

(ii) ज़िंदगी की चकाचौंध में इंसान गाँव के शुद्ध वातावरण, माता-पिता की सेवा, ताजा फल, अन्न, सब्ज़ियों से दूर हो गया है। 1

(iii) गाँव में ही सम्मान की ज़िंदगी जीने का निर्णय हमें स्वरोज़गार करने और आत्मसम्मान से जीने का संदेश देता है। 1

7. (i) संत रविदास ने ईश्वर और अपनी तुलना चंदन-पानी, दीया-बाती, मोती-धागा, घन-मोर, स्वामी-दास से की है। ½ x 4

(ii) श्री कृष्ण के सिर पर सुंदर चोटी है। वे पीले रंग की कच्छी पहने हुए हैं। पाँवों में पैंजनी बजाते हुए धूल से सने खाते और खेलते हुए आंगन में सुशोभित हो रहे हैं। 2

(iii) रामधारी सिंह 'दिनकर' ने कायर उन्हें माना है जो मुसीबतों के आने पर डर कर घबराने लगते हैं और सूरमा उन्हें माना है जो मुसीबतों के आने पर न डरते हैं न ही एक क्षण के लिए भी धैर्य खोते हैं। 2

8. (i) 'मूर्ख कौन' पाठ में सैनिकों ने कुँए से पेंदी फूटी बाल्टी से पानी निकालने की बार-बार कोशिश करने की घटना से मूर्ख की पहचान की। 2

(ii) ध्यानचंद कुश्ती पसंद करते थे। वे कक्षा छह तक पढ़े थे। उन्होंने तीन बार ओलंपिक खेलों में हिस्सा लिया था। वे सेना में नायक के पद पर भर्ती हुए थे। (किन्हीं दो का उल्लेख) 1 x 2

(iii) 'अब्राहम लिंकन का पत्र' पाठ से एक नेक, ईमानदार साहसी और संवेदनशील इंसान बनने की प्रेरणा मिलती है। 2

9. (i) क्रिया विशेषण (ii) संबंधबोधक
(iii) योजक (iv) विस्मयादिबोधक 1 x 4 = 4

10. (i) घुड़सवार (ii) रामू की माँ
(iii) अशफ़ाक ऊल्ला खाँ (iv) विश्वेश्वरैया 1 x 4 = 4

11. **गद्यांश-1**

(i) रोगों से लड़ने की क्षमता।

(ii) तपेदिक और अन्य संक्रामक रोग।

(iii) बीड़ी-सिगरेट और चिलम पीने वालों के।

(iv) पीलिया और एड्स का। 1 x 4 = 4

12. **गद्यांश-2**

(i) सुख की प्राप्ति के लिए।

(ii) सुख लाते हैं।

(iii) बाधा, विघ्न, विपत्ति, कठिनता के बीच।

(iv) क्योंकि इससे संघर्ष का सामना करने की क्षमता बढ़ती है। 1 x 4 = 4

13. (i) उन्होंने सच्चाई, निष्ठा, ईमानदारी, ईश्वर भक्ति, सही आचरण का समर्थन किया। (किन्हीं तीन का उल्लेख) 3 x 1 = 3

(ii) संतुलित, स्वस्थ तन-मन, साफ़-स्वच्छ पर्यावरण व परिसर, प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति जागरूकता आदि का संदेश देता है। विद्यार्थी की स्वतंत्र राय/अभिव्यक्ति। 3

(iii) उन्होंने सदैव हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए काम किया। धर्म को कभी देशभक्ति के रास्ते में नहीं आने दिया। आज सभी के लिए इस तरह के विचारों की अत्यधिक ज़रूरत है। 3

14. (i) नया उत्साह और हौसला मिलता है। रास्ते में आने वाली मुश्किलों का उत्साह से सामना करेंगे। 1+2

(ii) कबीर बाहरी आडंबर, मंदिर-मस्जिद में विश्वास नहीं करते थे। आज सांप्रदायिक एकता व समाज में छाए दिखावे को दूर करने के लिए इसी की ज़रूरत है। 3

(iii) यह कवि बार-बार पाठक के आत्मविश्वास व उत्साह को जगाकर निराशा से उबारती है और कर्म में लगने के लिए प्रेरित करती है। 3

15. निबंध

भूमिका	1
विषयवस्तु	3
उपसंहार	1
भाषा	1

16. पत्र-लेखन

पत्र-लेखन की औपचारिकताएँ	2
विषयवस्तु	3
भाषा	1

17. कहानी-लेखन

विषय-वस्तु	4
प्रस्तुति	1
भाषा	1

❀ ❀ ❀

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
मुक्त बेसिक शिक्षा कार्यक्रम

प्रश्नपत्र : प्रारूप

1. उद्देश्यानुसार अंक-विभाजन

उद्देश्य	अंक	अंक प्रतिशत
ज्ञान	38	38
बोध	44	44
अनुप्रयोग / कौशल	18	18
कुल योग	**100**	**100**

2. प्रश्नों के प्रकारानुसार अंक-विभाजन

प्रश्न-प्रकार	अंक	प्रश्नों की संख्या	कुल अंक	समय (मिनट में)
निबंधात्मक	06	05	30	10x05 = 50
लघु उत्तर	04	10	40	06x10 = 60
अति लघुउत्तर	02	10	20	04x10 = 40
बहुविकल्पीय	01	10	10	01x10 = 10
कुल योग		**35**	**100**	**160+20 = पुनरावलोकन**

3. विषयवस्तु अनुसार अंक-विभाजन

माड्यूल	पाठों की संख्या	अंक
रचनात्मक कौशल	–	18
अपठित	–	08
व्याकरण	–	12
पाठ्यपुस्तक (गद्य)	–	32
(पद्य)	–	30
कुल योग	**100**	**100**

4. प्रश्नपत्र का कठिनाई स्तर

स्तर	अंक	प्रतिशत
कठिन	10	10
औसत	60	60
सरल	30	30
	100	**100**